राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 99 15 जुलाई 2005

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक : रुपए 40/-

भारत व नेपाल में

एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1. बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग 2
2. ध्यानाकर्षण बिन्दू 48
3. आगामी मास के सत्संग 48

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 109

दिनांक : 3 अप्रैल, 1993

समय : रात्रि

अब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरू जुगत लखाई।
क्रिया कर्म आचार मैं छोड़ा, छोड़ा तीर्थ में नहाना।।
सारी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना।।
ना मैं जानूं सेव बदंगी, ना मैं घंट बजाई।
ना मैं मूर्त धरी सिंहासन, ना मैं पुहुप चढ़ाई।
जो यह मूर्त मुख से बोलै, कर अस्नान न्हवाई।
पांच टके हौं देत ठठेरा, एकहि हौं ले आई।।
ना हरि रीझै जप तप कीन्हे, ना काया के जारे।
ना हरि रीझै धोती छाड़े, ना पांचों के मारे।।
दया राख धर्म को पालै, जग से रहै उदासी।
अपना सा जीव सबन का जानै, ताहि मिले अविनाशी।।
सहे कुशबद वाद को त्यागै, छोड गर्व गुमाना।
सतनाम तांही को मिलिहै, कहैं कबीर सुजाना।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों ! यह तो आप सभी को पता है कि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं, सीधा सादा आप जैसा ही हूं। पर यह मेरे सतगुरू महाराज, अरमान साहब की दया है। यह भी काफी बार मैंने आप लोगों को बताया है कि मैं बहुत घूमा हूं। हर एक मजहब वालों से बातें की हैं। उनसे टकराया भी हूं। पर

मैंने हर एक से कुछ लिया, खोया नहीं। होना भी ऐसा ही चाहिए। मजहब में आना बुरा नहीं है। मजहब से बंध जाना बुरा है।

काफी लोग मजहब से बंध जाते हैं। मैं मजहब से नहीं बंधा। सच्चाई से बंधा। आप लोग अगर सचाई को समझते हो तो मैंने काफी सत्संग किए हैं और मैंने आप लोगों को बताया भी है। आपको पता होना चाहिए कि सच्चाई किसे कहते हैं। जितने भी दुनिया में मजहब फैले हुए हैं, सब में ही सच्चाई है। हरेक में सच्चाई मिलती है। उस सच्चाई को हम लोग बाद में खत्म कर देते हैं। हम स्वार्थी लोग ऐसा करते हैं। स्वार्थ में आकर हम सच्चाई को खो देते हैं, जब तक आदमी निस्वार्थ नहीं है, जब तक वह कमा कर खाता है, वह किसी के मजहबों में नहीं फंसता है और न ही वह किसी धर्म का ठेकेदार बनता है। एक सच्चाई को पकड़ता है जो हमारा परम्परा का धर्म चला आ रहा है वह धर्म हमारी सष्टि रची उससे पहले भी था अब भी है और आगे भी रहेगा। उस धर्म को मैं राधास्वामी नाम बताता हूं। काफी लोग तो यह भी कह सकते हैं कि ये भी राधास्वामी मत से बंधे हुए हैं। पर मैं यह भी कहता हूं कि यह हमारा सच्चा धर्म है। यह आर्य धर्म है। इस धर्म के बिना न कोई मोक्ष में गया है और न जाएगा। यह कबीर साहब की वाणी है, यह उनका निजी शब्द है। कबीर साहब का यह वह शब्द है कि इससे कबीर साहब के अनुयायियों की आंखें खुल जानी चाहिएं। यदि वे इस शब्द को सुनें। अगर उनसे इस शब्द का निर्णय करने के लिए कहा जाए, तो वे तो सात जन्म भी इसका निर्णय नहीं कर सकते। इसका निर्णय तो वही कर सकते हैं जिन्होंने अभ्यास करके, इसका अनुभव किया है, मंजिल दर मंजिल। वे इसका निर्णय नहीं कर सकते हैं, वे तो सोहम् को ही खुदा समझते हैं। वे इसका निर्णय कैसे कर सकते हैं? कबीर साहब ने ही कह दिया है-

झूठी माया पिंड दिखाई। अवगत रचन रची है, पिंड मांही।।

यह तो इस पिंड में झूठी माया दिखाई है। इसके अंदर सतखण्ड का प्रतिबिम्ब है। जैसे सूर्य का प्रतिबिम्ब एक घड़े पर पड़ता है और घड़े का प्रतिबिम्ब दिवार पर पड़ता है। न सूर्य दिवार पर है और न सूर्य घड़े में है। सूर्य तो आसमान में है। लोग यह इसी तरह से प्रतिबिम्ब पड़ा हुआ बताते हैं। हम लोग तो प्रतिबिम्ब को नहीं प्रतिबिम्ब के प्रतिबिम्ब को ही पूजते हैं। मैं तुम्हारे ही शास्त्रों की तुम्हारी ही बातें कहता हूं। कबीर साहब पूर्ण पुरुष थे। सो मैं उनकी बातें बताता हूं। यह तो पिंड की रचना बताई है। इसमें सतलोक से नीचे जितना भी है काल और माया का देश है। यह कबीर साहब का वह शब्द है जो सभी ग्रंथों की जान है। सारी वाणियों की जान है। पर यदि इस शब्द को लेकर चलें और इसको समझें तो उनके प्राण निकल जाएंगे। वे डगमगा जाएंगे। आजकल तो राधास्वामी मत वाले भी इसका निर्णय नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे अभ्यास नहीं करते हैं। सो वे ढ़ीले पड़ जाते हैं। वे अपने धर्म को भूलते जा रहे हैं। हमारा सबसे बड़ा धर्म ही कमा कर खाने का था, शराब–कबाब से बचने का था। बाहर के आडम्बर को छोड़कर अंतर में जाने का धर्म था। यह मैं नहीं कहता और न ही यह कबीर साहब ने कहा कि तुम मंदिरों में मत जाओ। कबीर साहब ने यह भी नहीं कहा कि तुम मूर्ति पूजा न करो। कबीर साहब ने यह भी नहीं कहा कि तुम व्रत मत करो। पर तुम व्रत को समझते नहीं हो। मूर्ति पूजा को भी नहीं समझते हो। मूर्ति पूजा तो संतमत वाले भी करते हैं। अगर तुम पूछते हो तो संतमत वाले अपने गुरू के फोटो क्यों रखते हैं। क्या आर्य समाजी मूर्ति पूजा नहीं करते हैं? दिवाली के दिन लक्ष्मी की पूजा करते हैं। क्या वह मूर्ति पूजा नहीं है? अगर हम लक्ष्मी की पूजा करने की बजाए विष्णु भगवान की पूजा करें तो लक्ष्मी तो आप ही आ

जाएगी। अगर हम किसी के पति की पूजा करेंगे तो पत्नी तो अपने आप ही चली आयेगी। पर वे औरों का तो खंडन करते हैं और अपने आपको देखते नहीं हैं। सो मंदिरों की बुराई मत करो। पर जो मंदिरों का निशाना था उस निशाने को तो हम भूल ही गए हैं।

बात केवल इतनी ही है। कबीर साहब ने तो यह कही है कि मैंने न तो मूर्ति को सिंहासन पर रखा है और न उन पर मैंने फूल चढ़ाए हैं। पर क्या कबीर साहब ने पूजा नहीं की? कबीर साहब ने पूजा की। उन्होंने अभड़ पुरुष की पूजा की। उन्होंने उस कुल मालिक की पूजा की। यह कहते हो कि उन्होंने नहीं की तो तुम उनके दोहे ही सुन लो। वे क्या कहते हैं-

अभड़, अभंगी पीव है, ताका निर्भय दास।
तीन गुणों को मेहल कर, चौथे किया निवास।।

अब उन्होंने चौथे में क्या किया? वे कहते हैं-

आदि, अंत और मध्य लौं, अभड़ सदा अभंग।
कबीर ता कर्ता का, कभी न छोड़े संग।।

अब बताओ, कबीर साहब तो यह कहते हैं कि उस अभड़ का, उस कर्ता का वह कभी भी संग नहीं छोड़ता है। यह कबीर साहब की पूजा है या नहीं? मुझे हिन्दी की चिंदी नहीं बनानी आती है और न ही चिंटी की खाल उतारनी आती है। पर मैं आप लोगों को सीधी बातें बताता हूं कि कबीर साहब उस अभड़ की पूजा ही तो करते हैं, जब वे कहते हैं कि वह उसका कभी भी संग नहीं छोड़ते हैं। ये उनका प्यार ही तो है। सो यह अपने आप ही पूजा हो गई। तुम रात और दिन आरती तो उतारते रहते हो पर अगर तुम्हारा प्यार नहीं है तो वह पूजा तो तुम्हें खा जाएगी। जिनका प्यार है, पर वे आरती नहीं उतारते हैं तो उनकी वह प्रीति उनको उतार देगी। जो रात दिन पूजा करते रहते हैं उनकी तो औलाद भी बिगड़ जाती है। पर जिनको विश्वास था पर पूजा कभी नहीं की,

उन्हीं को उसमें ही परमात्मा के दर्शन हो गए। करमां बेचारी ने कब थाल परोसे थे? उसने कब आरती उतारी और कब भोजन बनाया? उसका तो विश्वास ही था। बल्कि उसका तो जिसके पास वह जाती थी, उस ब्राह्मण पर विश्वास था। उस विश्वास और श्रद्धा के कारण उसे दर्शन हो गए। मैंने ये बातें कई बार सत्संग में बताई हैं। तुमने सुनी होंगी। वह पंडित जी कहीं चला गया और उसने करमां को वहां छोड़ दिया और उससे कह दिया कि तू अच्छी लड़की है। इसकी पूजा करना। मैंने भी बड़ी आरतियां उतारी हैं। करमां ने कहा–ठीक है, दादा। वह पण्डित तो चला गया। उसके पीछे उसने आरती उतारी और पूजा की। प्रसाद बना कर उसके सामने रोटी रख दी। वह पर्दा हटा कर देखती रही। यह मैं तुम्हारी ही बताई हुई बातें बताता हूं। मैंने ऐसी बातें 'भक्त माल' में सुनी हैं। वह पर्दा हटाकर देखती रही। पर रोटी तो खाई हुई नहीं मिली। उसने कहा कि भाई, कान्हा! रोटी तो तुझे खानी ही पड़ेगी।

पर आप यह कहोगे कि आप तो खंडन कर रहे थे और अब मंडन करने लग गए। मैंने खंडन तो कभी भी नहीं किया। मैंने तो हर वक्त मंडन ही किया है। मैं तो खंडन उन लोगों का करता हूं जो अविश्वासी हैं। वे न गुरू से फायदा उठा सकते हैं और न ही देवी–देवताओं से फायदा उठा सकते हैं। अविश्वासी तो कहीं भी फायदा नहीं उठा सकता है क्योंकि संत कहते हैं-

निश्चय बोवे नेड़े निपजे, कटे काल जम फांसी।
मन मेरा हो जा, नगरिया का बासी।।

कबीर साहब भी कहते हैं-

काशी में न काने में, मथुरा में न कैलाश में न छुरी में। न भेड़ में न बकरी में। मैं तो तेरे विश्वास में हूं। पर मिलूंगा कब? मिलूंगा एक पलक की तलाश में।

इसीलिए हजूर महाराज शिवव्रत लाल ने कहा–छः महीने का ही कोर्स है। मैं आज एक बात दावे के साथ कहता हूं। यह दो ही महीने का कोर्स है। बल्कि मैं तो एक दिन ये बातें सोच रहा था कि उन्होंने छः महीने का कोर्स क्यों बताया? पर आज मैंने यह कितनी बड़ी बात कह दी है। कोई भाई यह भी कह देगा कि मुझे यह दो महीने का कोर्स करवा दो। सो दो महीने में तो उसको खुद ही शांति मिल जाएगी। पर तुम खुद ही जब शांति के पास नहीं बैठते हो तो शांति कैसे मिलेगी? शांति तो तुम्हें तभी मिलेगी जब तुम्हारी भ्रांति दूर हो जाएगी। तुम्हारे दिल में क्या हो रहा है?

लग रही आफता, नहीं धापता।
मग की गेल हो रहा चीता।।
कहे चिम्मन अंत में, जागा रीते का रीता।।

मेरा तो अपने सतगुरू पर विश्वास था। मैंने कभी नहीं सोचा कि यह जाति का अहीर है। बल्कि मैं तो अपनी मस्ती में बोलता था, यह कहता था-

मुझे प्यारा लागै हे, एक जूई का हीर।
दुनियां तो हीर कहै, मेरा सतगुरू मुर्शिद पीर।।

मैं आप लोगों को विश्वास के बारे में ही बता रहा हूं कि ये मंदिर वाले तो खाली बैठे हैं। ये रात और दिन घंटा बजाते हैं। घंटा भी कौन बजाता है? ये तो कैसेट लगा देते हैं। वही बजती रहती है। इनका तो सुमरन भी खत्म हो गया है। इन कैसेटों ने सुमरन को भी खत्म कर दिया है। उनकी ये आरती उतारते थे, अब तो उसकी जगह भी कैसेट लगा देते हैं। गाना बजाना हो जाता है और छुट्टी कर देते हैं। अब तो यही खेल हो गया है। तो फिर शांति कैसे आएगी? जब कोई भाई किसी के पास जाता है कि भाई! मेरी करड़ाई है। तो वह कहता है कि तेरी करड़ाई तो उतर जाएगी। तू जाप ले ले। मैंने जप करके रख रखे हैं अब

उसने तो जप करके रख दिये हैं और उससे कोई पैसे वाला खरीद भी लेगा। क्या उसको शांति मिल जाएगी? शांति उसे कभी भी नहीं मिलेगी। शांति तो तभी मिलेगी, जब वह खुद ही कुछ करेगा।

तो मैं आपको करमां के बारे में बता रहा था। करमां के कान्हा ने रोटी नहीं खाई। उसने कहा–भाई रोटी तो खानी ही पड़ेगी। अब उसे तो यही विश्वास था कि ये कान्हा पंडित दादा के पास तो रोटी खा लेता था, पर तेरे पास नहीं खाता है। क्योंकि तेरे मैले कपड़े हैं। वह ब्राह्मण है और तू एक जाटनी है। यह तेरा भोजन कैसे खाए? फिर भी उस बेचारी ने बहुत स्वांग रचा। दो तीन दिन बीत गए। फिर उसने एक दिन बड़े प्यार से खिचड़ी बनाई। उसने सोचा कि खिचड़ी बना देती हूं। उसने तीन चार दिन से रोटी तो खाई नहीं है। शायद खिचड़ी खा ले। रोटी से तो उसके पेट में दर्द भी हो सकता है। अब उसने नर्म–नर्म खिचड़ी बनाई। उसमें घी डाल दिया और आगे पर्दा तान दिया। उसने कहा–भाई कान्हा! खा ले खीचड़ी।

दादा गया गामड़े, बेरा ना कदसी बाहवड़े।
तेरा भूखे मरते का सूख जांगा गाहलड़ा।।

इस तरह से गाने वालों को मैंने सुना है। किसी वक्त पर ये शब्द गाया करते थे। पर करमां ने कहा–बच्चू अगर तू नहीं खाता है तो मैं भी नहीं खाऊंगी। उसने कहा–बला। तू इतनी ऐंठ क्यों कर रहा है? मैं एक पलिया घी का और डाल देती हूं। जैसे मां अपने बेटे को समझाती है इसी तरह से वह भी कर रही थी।

करमां बेटी जाट की, तेरे घी घाले एक बाटकी।
कान्हा खाले रे, कर झाबलिए की ओट।

अब उसने पर्दा छोड़ अपनी घाघरी की ही ओट कर ली। सांवरिया तो प्रेम का ही भूखा होता है। सो वह मालिक भी तो प्रेम का ही भूखा है। तो क्या वह सतगुरु प्रेम का भूखा नहीं है? पर तुम

सच बताओ, तुम सतगुरु से कितना प्यार करते हो? मैंने सत्संगों में कई बार कहा है कि तुम उसको अपने पुत्रों जितना भी प्यार नहीं कर सकते हो।

ये मंदिर वाले भी, अगर उन मूर्तियों से अपने पुत्रों जितना भी प्यार नही करते हैं तो उनको वे मूर्तियां क्या दे देंगी?

सो उनको तो इतना प्यार करना चाहिए। अगर तिरना चाहते हो। यह भी मैं कहता हूं कि इनका खंडन मत करो। कई लोग खंडन करते हैं, पर कहते हैं कि परमात्मा जर्रे–जर्रे में हैं। वह सर्व व्यापक है। ऐसी बात नहीं है कि वह एक ही किसी जगह पर है। क्या वह एकदेशीय है? नहीं वह तो सर्वदेशीय है। सो जब वह जर्रे–जर्रे में ही है तो मूर्ति तो बहुत बड़ा जर्रा है। उसमें तो निश्चिय ही है। पर वह मिलेगा विश्वास से ही। तुम्हें टाली हिलाने से नहीं मिलेगा। उसके आगे रोटी रखने से भी नहीं मिलेगा। सो जब तुम हाजिर नाजिर सतगुरू से ही प्यार नहीं कर सकते हो तो मूर्तियों से तो प्यार नहीं कर सकते। यह मूर्तियों की तो एक नकली बाजी दिखाई है। ये तो काल महाराज का एक खेल है। वह कहता है कि मैं जीवों को निकलने नहीं दूंगा। मैं अड़सठ तीर्थ रच दूंगा। व्रत रच दूंगा। चार वेद छः शास्त्र 18 पुराण रच दूंगा और मैं तीर्थ, व्रत, होम, यज्ञ ऐसे रच दूंगा कि मुझ से बाहर कोई भी नहीं निकल पाएगा। कबीर साहब ने कहा है कि ऐसी बात तो नहीं है। मेरा तो एक शब्द ही काफी है। मेरा शब्द जिसने सुन लिया, वह तेरे काबू में नहीं आएगा। वह तेरे से बाहर निकल जाएगा। वह शब्द एक धर्मदास को ही सुनाया था। बाकी तो सारे के सारे झूठे हैं और अपने–अपने न्यारे न्यारे ढ़ोंग बनाए बैठे हैं। कबीर साहब ने उसको भेद बताते ही कह दिया कि

धर्मदास ! तोहे लाख दुहाई।
सार भेद ये बाहर न जाई।।

कबीर पंथियों से यह बात अगर पूछोगे तो वे बताएंगे नहीं। सो मैं कबीर का बेटा हूं। आप लोगों को सच्ची बातें बताता हूं। कबीर साहब ने उसके मुंह में गुल्ला ठोंक दिया और वह शब्द आगे नहीं बताने दिया। सो हमें विश्वास कैसे आए? हम कैसे जाएं? अगर हमारा विश्वास होता तो काम ही बन जाता। जब संत सतगुरू आते हैं तो वे विश्वास करा देते हैं। वे कहते हैं कि अगर तुम विश्वास करना चाहते हो तो मौजूदा संत सतगुरू से प्यार करो। तुम तिर जाओगे। पर मैं उनकी भक्ति बता रहा था। आप कहोगे कि तुम दोनों तरफ मत ले चलो। मैं दोनों तरफ नहीं ले जाता हूं। मैं तो विश्वास के बारे में बातें करता हूं। आर्य समाजी बने फिरते हैं, कोई आज तक सतखण्ड में नहीं गया है। उनको सतखण्ड का पता ही नहीं है क्या सतखण्ड है? वे औ३म् का वर्णन करते हैं वे औ३म् का भी वर्णन ही करते हैं औ३म् तक वे पहुंचते भी नहीं है। उन्होंने औ३म् की धुनि को कभी भी नहीं सुना है। मैं क्यों बोलता हूं? इसीलिए बोलता हूं कि कबीर साहब ने 32 कड़ी के शब्द को खोल खोल कर बताया है। कौन कहता है कि कबीर साहब आर्य धर्म को नहीं मानते हैं। कबीर साहब एक ही आर्य धर्म को मानते हैं। चौकस होकर और दढ़ता के साथ। यही हमारा धर्म था। आर्य धर्म का हो चाहे सनातनी हो या कोई और। सभी का पहला धर्म तो यही है कि सतगुरू की खोज करो। अगर कोई इसी धर्म को चूक जाता है तो दूसरे धर्म से फायदा उठा ही नहीं सकता है। सो फायदा तो वही उठा सकता है जो पहले धर्म को अपना लेता है।

हमारा पहला धर्म है-सतगुरू की तलाश करो। अब सोचो दूसरा धर्म क्या है? दूसरा धर्म यह है कि काम करो। अपने नाम की कमाई करो। हम भूलते जा रहे हैं। सीधे शब्दों में कहते हैं कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। अब धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष किसे कहते हैं?

दूसरे आदमी तो यही कहते हैं कि धर्म करो, काम करो, अर्थ कहते हैं, धन को और फिर मोक्ष आता है। पर यह मतलब नहीं है। हम कहते हैं कि हमारा धर्म है, सतगुरू की तलाश करो, सभी का यही धर्म है। यही परम्परा का धर्म है और आखिर तक यही धर्म काम देता है। इस धर्म से जो चूक जाता है वह सभी मजहबों (धर्मों) से धोखा खा जाता है। वह कहीं का भी नहीं रहता। धर्म के बाद काम करो, जब सतगुरू से नाम मिल जाता है, तो अपना काम करो, नाम की कमाई करो। अब अर्थ कहते हैं धन को। अपनी नाम की कमाई से, नाम का धन इकट्ठा कर लो। जब नाम की कमाई कर ली तो मोक्ष निश्चिय प्राप्त होगा। मोक्ष तो नाम से ही प्राप्त होगा। अगर तीर्थ, व्रत, पूजा पाठ, होम, यज्ञ, दान पुण्य से किसी की मोक्ष हुई हो तो बताओ कि मैं गलत बोलता हूं। मैं अनपढ़ हूं। तुम पढ़े लिखे हो। इतना जरूर कहूंगा कि तीर्थ व्रत करने से, पूजा–पाठ से स्वर्ग वैकुण्ठों में जाते हैं। मोक्ष में नहीं। मोक्ष में तो राधास्वामी नाम के ही प्रताप से जाना पड़ेगा। जिन को इन अठारह मंजिलों का पता लग गया, जिनको सतगुरू की दया से पूरा उपदेश मिल गया है वे चौरासी से बच जाएंगे। कभी काल के मुंह में नहीं जाएंगे। क्योकि कबीर साहब ने अपनी आखरी कलियों में बड़ा खोलकर कहा है-

झूठी बाजी पिंड दिखाई। अवगति रचना रची अंड मांही।।

कुछ इस प्रकार से करके उन्होंने बहुत ही खेल बताया है। वह कारीगर न्यारा है। उस कारीगर की हम तलाश नहीं करते कि वह कारीगर कहां है? हम तो दूसरे ही कारीगरों में फंसते रहते हैं। इस तरह मैं बता रहा था कि लोग कहते हैं कि परमात्मा मूर्ति में भी मिल जाता है। पर तुम्हें तो नहीं मिला।

पुराने गीत गाते हैं। एक प्रेमी ने कहा कि परमात्मा मिलता है। मैंने पूछा कि कैसे? उसने कहा–परमात्मा तो राम–राम कहने से

मिल जाता है। मैंने पूछा–किसको मिला? उसने कहा–रंडी को तोता पढ़ाते–पढ़ाते मिल गया। सोचो यह कितनी अज्ञान की बात है। तुम अपने इतिहास को ही देखते होंगे-

सूआ पढ़ावत वेश्या तारी, तारी मीरां बाई।

अर्थात् वह सूआ पढ़ाती तारी। वह कैसे? कि वह तोते को राम–राम पढ़ाती थी और उसको राम–राम कहना सिखाती थी। फिर तो आप भी सभी तोता पाल लो। मैं राम नाम का खण्डन नहीं करता हूं। मैं तो बातें बताता हूं कि तोता पालो। फिर तोते पाल कर सभी तिर जाओ। उसने कहा–वह तो जमाना था। इसका मतलब तो यह हुआ कि राम बड़ा नहीं, जमाना ही बड़ा है। राम बड़ा है तो अब तिर कर दिखाओ और अब भी तुलसी का पत्ता एक तरफ डाल दो। तराजू के दूसरे पलड़े में सारी त्रिलोकी तोल दी थी। सो अगर राम बड़ा है तो आज भी वह काम करके दिखाओ। फिर कहते हैं कि राम बड़ा नहीं वह तो वक्त ही बड़ा था। तो फिर तुम राम को बड़ा क्यों बताते हो। पर राम बड़ा नहीं है और न वक्त ही बड़ा है। तुम्हारा विश्वास बड़ा है। अगर तुम्हारा विश्वास है तो आज भी सब कुछ बन जाता है। पर हमारे तो विश्वास में हलचल मची रहती है। हम गिर जाते हैं। हमारा विश्वास इतना ढ़ीला पड़ जाता है कि मौजूदा संत पर विश्वास नहीं करते हैं। बल्कि हजारों वर्ष पहले जो गुजर चुके, उन पर विश्वास कर लेते हैं। तो तुम्हारा मन ही वह काम करता है। वे तो भूत बने नहीं फिरते हैं। आज वह सचाई का जमाना नहीं है। फिर भी मैं आप लोगों को मुंह आई बातें कह देता हूं। क्या करूं? जिनकी तुम बातें सुनते हो, क्या उन बातों से किसी का भ्रम दूर हुआ है? किसी ने आकर तुम्हें जवाब दिया कि कौन स्वर्ग में गया कौन वैकुण्ठ में गया। संत तो यह कहते हैं-

जा को दर्शन इत है, वा को दर्शन उत।
जाको दर्शन इत नहीं, वा को इत न को उत।।

ये बातें कब होती हैं कि-

सतगुरू खोजो हे प्यारी, जग में दुर्लभ रत्न यही।

सब से बड़ा रत्न तो यही है। समुद्र में से मथ कर चौदह रत्न निकाले थे। पर उनमें यह रत्न तो नहीं निकला। यही सबसे बड़ा रत्न है। यह रत्न निकला हो तो बताओ। यही मैंने आपको कहा कि हमारा धर्म भी यही है सब से बड़ा। **जिस मजहब लाइन और संस्था में सतगुरू को सिर पर नहीं रखते और सतगुरू की बड़ाई नहीं करते, वे नास्तिक हैं वे आगे जा नहीं सकते हैं। सो-**

सतगुरू सिर पर राखिये, चलिए आज्ञा माहिं।
कहे कबीर ता दास को, तीन लोक भय नाहिं।।

सो इन तीन लोकों में तो नकली माया रची हुई है। फिर कहां गए? सो आगे चलना चाहिए। जब आगे चलोगे तभी पता लगता है। पर इसने कबीर साहब का शब्द गाया है-

अब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरू जुगत लखाई।

भूला कैसे? भूला यही कि सारी क्रिया छोड़ दी और लोगों ने नास्तिक कहना शुरू कर दिया। सोचो नास्तिक कौन है, कैसे है? जब एक आदमी पूजा पाठ करता है और स्वर्ग वैकुण्ठों में जाता है, वापिस आता है और एक इन सारी चीजों को भूल कर वहां जा मिलता है इससे तुम्हारी मुक्ति नीचे रह जाती है। सालोक, सामीप्य, सारूप, सायुज्य, ये सभी नीचे रह जाती हैं। इन से आदमी आगे चला जाता है। बताओ। भूला समझ गया। इसीलिए कहता है कि मैंने संसार की बातें छोड़ दीं। इनमें से तो मैं भूल गया था और मुझे पता नहीं था। मैं तो फंसा हुआ था। अब सतगुरू ने बचा लिया। अब आप यह कहोगे कि इन बातों से तो आप हमारा सबका खण्डन ही कर रहे हो। मैं किसी का खण्डन

नहीं करता। मैं तो तुम्हारे शास्त्रों की गवाही देकर बताता हूं। जब आपको यहीं शान्ति नहीं आएगी तो मर के कभी भी शांति नहीं आयेगी। मैंने आप लोगों को कोई घमण्ड की बात तो नहीं कही। मैंने आपको बताया कि दो महीने का ही कोर्स है। पर यह कोर्स तो उन्हीं के लिये है जिन्हें उस घर पहुंचना है। आप यह कह सकते हो कि क्या दो महीने में पहुंचा जा सकता है? अरे, भले लोगो ! सोचो, क्या कभी तुमने दिमाग भी लगाया है? मेरे दाता दयाल महर्षि शिव्रतलाल बिल्कुल ठीक कह गए और जो कुछ मैं कहता हूं, वह भी सोलह आने ठीक है। तुम ही मेरी बात को सिद्ध कर दोगे। आप पूछोगे कि यह किस तरह होगा? अगर तुम दो महीने में पहुंचना चाहते हो तो राजा परीक्षित तो सात दिन में ही पहुंच गया। सोचो, अब तो मैं तुम्हारे ही ग्रंथों का हवाला देता हूं।

राजा परीक्षित सात दिन में ही समझ गया था। आज तो रात दिन कथा पढ़ी जाती है और भागवत पढ़ी जाती है। क्या इससे किसी को ज्ञान हुआ और क्या इससे कोई तिरा? लोगों को मौत सिरहाने नहीं दिखाई देती है। इसी कारण से वे तिरते नहीं हैं। राजा परीक्षित को मौत सिरहाने दिखाई देती थी। सो अगर तुम सतगुरू की शरण में आकर ये सोचो कि, जाना है, यहां से, यहां रहना नहीं है और जाना भी जल्दी ही है। इसलिए काम जल्दी कर लेना चाहिए। तो तुम राजा परीक्षित की तरह से जल्दी ही काम कर सकते हो। तुम जल्दी ही अपने घर पहुंच जाओगे। रामानन्द ने हद कर दी है-

अब के चूके पीछे नहीं ठिकाना।
दिन पर दिन चोला होय पुराना।।

यह चोला तो पुराना होता जा रहा है। ऐसे यह एक दो दिन की बात नहीं है यह तो दिन प्रतिदिन की बात है। तुम तो अपनी सारी पूंजी ही खो बैठे हो। एक जगह से नहीं गई—पूंजी तो नौ

स्थानों से खोई है। एक द्वार से ही पूंजी नष्ट हो रही हो तब भी हम बच सकते हैं। आप यह प्रश्न कर सकते हो-क्या नौ द्वारों से हमारी पूंजी का नाश हो रहा है? आप पूछोगे कि यह किस प्रकार नष्ट हो रही है? नीचे के दो द्वार गंदे हैं। इनसे नष्ट हो रही है। आगे जबान से भी पूंजी का विनाश हो रहा है।

वाणी ऐसी बोलिये, सुख उपजे चहुं ओर।
वशीकरण एक मंत्र है, तू तज दे वचन कठोर।।

अब आप बताओ, हमारी पूंजी का विनाश हुआ है कि नहीं। कानों से भी पूंजी का विनाश हो सकता है। आंखों से भी पूंजी का विनाश होता है। नाक से भी पूंजी नष्ट होती है। अब इस बात को ज्यादा खोलने की जरूरत भी नहीं है। तुम जब नौ द्वारों से पूंजी का विनाश कर रहे हो तो कैसे बच सकते हो। पूंजी का विनाश तो एक द्वार से ही हो जाता है। फिर तुम्हारी तो नौ द्वारों से पूंजी बही जा रही है। अपनी पूंजी का विनाश मत होने दो। उसे संभालों, अगर इन्हीं बातों पर चलते रहे तो डूब जाओगे। अपनी करणी करो और करणी का महात्मा मिल जाए और वह जो अपना तजुर्बा बता दे तो तुम उस की रहनी पर चल पड़ो तो फिर तुम तिर जाओगे। सो कबीर साहब का जो शब्द मिलेगा वह टकसाली शब्द मिलेगा और कबीर साहब एक टकसाली संत थे और उनकी बातों पर चल पड़े तो जीवित हो जाओगे। कबीर साहब पूर्ण पुरुष थे। उन्होंने बिल्कुल सोलह आने ठीक बात कही है-

अब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरू जुगत लखाई।

उस सतगुरू ने कौन सी जुगत बताई है? मैं भी तो आप लोगों को जुगत बता रहा हूं। तुम भूले फिरते हो। मैं बताता हूं कि नौ द्वारों से तुम्हारी पूंजी बही जा रही है। सारे ही तो बहे जा रहे हो। जिसकी नदी का एक द्वार खुल जाए तो भी नुकसान हो जाता है। जब नौ द्वार और नौ नाले खुल जाते हैं तो नहर खाली हो जाती

है। सो यह शरीर तो बड़ा भारी दरिया है। इसके नौ दरवाजे, नौ नाले हैं। जिसकी सुरत इन नौ नालों में से बह रही है वह सुरत छठे चक्र पर कैसे एकाग्र (एकत्रित) हो सकती है। इसीलिए तो महात्मा कहते हैं–

तीनों बंद लगाय के सुनो अनहद टंकोर।
नानक सुन्न समाधि में, नहीं सांझ नहीं भोर।।

ये संतों का मार्ग है। अब आप बताओ, संतों ने कहने में तो कसर नहीं छोड़ी है। कबीर साहब जी कहते हैं–

मन जा तो जाने दे, गहकर राख शरीर।
बगैर चिल्ले चढ़ाए कमान को, कैसे लागे तीर।

कबीर साहब फिर कहते हैं-

दौड़त दौड़त दौड़िया, जहां तक मन की दौड़।
दौड़ थकी मन थिर हुआ, वस्तु ठौर की ठौर।।

अब जब वह मन ठौर की ठौर रहेगा तो क्या काम करेगा? अगर तुम्हारे अंदर समझ और विवेक नहीं है तो वह मन कुछ भी नहीं करेगा। बैठे रहो। कबीर साहब कहते हैं-

आसन लाके बैठ गया, मिटी न मन की आस।
कोल्हू के बैल ज्यों, घर में कौस पचास।।

सारा दिन बैल कोल्हू में चलता रहता है और जब उसकी पट्टी खोलते हैं तो वह वहीं घर में ही मिलता है। यही हालत उन लोगों की हो जाती है जो दो–दो घंटे ध्यान में बैठते हैं और उनकी सुरत चढ़ती नहीं है। उन्हें अपनी कमी अपने आप ही ढूंढ़ लेनी चाहिए।

मैं आप लोगों को कमी की बातें बताता हूं। मेरी खुद की ही बताता हूं। कुछ समय पहले की बात है मैं बैठा था। मेरा मन नहीं टिका। अब आप बताओ जब मेरा ही मन नहीं टिका तो मैं सोचता हूं कि तुम क्या करते हो। मन मेरा टिका नहीं। मैं काफी बातें

सोचता रहा। मैंने सोचा कि बात क्या हुई? आज परेशानी कैसे है? यह क्या बात है? सुबह ही कोई बात ऐसी ही होगी। मैंने कहा–यह परेशानी थी। इस परेशानी से रूकावट आई। क्योंकि जो संत महात्मा होते हैं वे ध्यान में बैठते हैं तो कइयों का ख्याल करते हैं। क्या तुम सतगुरू से मिलना चाहते हो? सतगुरू के टाइम का ही पता नहीं है। अगर तुम उससे मिलना चाहते हो तो सुबह शाम ध्यान में बैठा करो। अगर तुम उस वस्तु को तलाश करना चाहते हो तो।

जब सतगुरू ध्यान में बैठता है तो तुम भी ध्यान में बैठो। दोनों की रेडीएशन मिल जाएगी। जब दोनों की रेडीएशन टकरा जायेगी तो तुम्हारा ध्यान जरूर ही लगेगा। पर प्रश्न बड़ा टेढ़ा है। कौन सा प्रश्न है? मैं पहले ही बता देता हूं। हमारे गांव में एक ब्राह्मणी है, वह बेचारी बहुत ही अच्छी है। उसने कहा–महाराज जी तो एक है और दुनिया तो हजारों हैं। यह इस दुनिया को कैसे तारेगा? किस तरह से इनको देखेगा? अब दूसरे ही दिन उसने आकर हाथ जोड़ लिए। मैं सच कहता हूं, वह जीवित है। वह मेरे पास हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई। मैं उसको दादी कहता हूं। मैंने उससे पूछा–क्या बात है दादी? उसने कहा–भाई ! मेरी गलती है माफ कर दे। मुझे तो पता नहीं था। मैंने पूछा कि बात क्या थी? उसने बताया–यह किस–किस को पार तारेगा। यह तो एक है और इसने हजारों चेलें बना लिए हैं। मैंने पूछा–फिर बात क्या हुई? उसने कहा–मैं तो जब अपने ध्यान में बैठी तो आप के असंख्य ही रूप दिखाई दिए। हजारों की गिनती में ही थे। इसलिये मैं कहता हूं कि सतगुरू की रेडीएशन काम करती है। जब वह भी बैठता है ध्यान में और तुम भी बैठते हो तुम्हारा प्रश्न, तुम्हारा यह प्रश्न कि यह एक सतगुरू सभी को कैसे संभालेगा। तो क्या तुम्हें पता नहीं है कि वह सूर्य चन्द्रमा एक–एक ही आकाश में हैं? उनको हजारों घड़ों में देखो

तो आपको उन सभी हजारों घड़ों में भी वह सूर्य दिखाई देगा। हजारों ही घड़ों में देखो चन्द्रमा दिखाई देगा। फिर वह शब्द तो सारी ही दुनिया का कर्ता है। वह जर्रे–जर्रे में है। वह शब्द तो सभी का है। जब तुम बैठोगे तो मिल जाएगा। अब आप फिर प्रश्न कर सकते हो कि वह तो सूर्य है। एक जगह टिका हुआ है। वह तो सभी में दिखता है। वह चन्द्रमा है, फिर सतगुरू कैसे उनकी तरह हुआ? सो सतगुरू इस देह का नाम नहीं है। सतगुरू तो शब्द स्वरूपी है। वह शब्द है। वह शब्द सारी ही दुनिया की जान है। शब्द से ही तो दस अवतार बने हैं। शब्द से ही ब्रह्मा, विष्णु बने हैं। शब्द से ही काल निरंजन बना है। इसे शिव बाबा कहते हैं। हम काल कहते हैं और कोई ओ३म् कहते हैं। शब्द से ही सब बने हैं। शब्द से ही सोलह सुत बने हैं, सतपुरुष के। जितना भी पसारा है, सब ही शब्द से बना है। सो सभी शब्दों की जड़ वह राधास्वामी दयाल है। जब अभ्यासी उस राधास्वामी दयाल से मिल जाता है तो उस वक्त उसमें कोई भी कमी नहीं रहती है।

मेरी बात तो बारीक चली गई है। मुझे पता नहीं तुम समझते हो कि नहीं। उस अभ्यासी में कोई भी कमी नहीं रहती हैं वह खुद ही राधास्वामी दयाल का रूप बन जाता है। फिर वह कितने ही गुरू देखेगा? तो वह कितने ही गुरू देख लो। जैसे ब्रह्म नेष्ठा को हर जगह पर ब्रह्म ही दिखाई देता है। और भी मैं बता दूंगा, जिसको भूत लग जाता है और वह डरता है उसको जहां भी वह देखता है उसे वही भूत दिखाई देता है, जिसको दुश्मन का डर होता है। उसे रात को सोये को भी दुश्मन दिखाई देते हैं। सो इसी तरह से जिसका शब्द खुल जाता है उसको तो वह चाहे कहीं भी देख लो वही सतगुरू का ही रूप नजर आएगा। दूसरा रूप उसको नजर नहीं आता है। इसको कहते हैं, गुरू भक्ति। इस भक्ति को करने पर हमारा जीवन सफल हो जाता है। पर आपने तो यह

कभी नहीं पूछा कि ये तजुर्बा कैसे बने? मैं तो अपने आप ही बताता हूं। आप अभ्यास रोज किया करो। अगर तुम्हारा मन नहीं टिकता है तो कोई बात नहीं है। यह तो मन की आदत है। जब मन अपनी आदत को नहीं छोड़ता है तो तुम क्यों छोड़ते हो?

एक प्रेमी आज भी कह रहा था–क्या करूं? बैठता हूं, मन डिग जाता है। मन छलांगे मारता है। मैंने कहा–मन अपना काम करता है। तू अपना काम कर। तेरा काम मन को मोड़ कर लाने का है। मन का काम तुझे डिगाना है। यह मन तो युगों युगों से बिगड़ा हुआ है। सो वह मन कब टिकेगा? वह तो तभी टिकेगा जब तुम शब्द की कमाई करोगे। पर शब्द की कमाई कब होगी? अब वही बात आती है कि वह कैसे होगी? आप तो कहते हो कि दो ही महीने में हो जाएगी। पर मैंने यह भी सिद्ध कर दिया है कि यह तो सात दिन में भी हो सकती है। आप लोग मौत को हर वक्त याद रखो। सच्चाई से कहता हूं। अपनी ईमानदारी और सच्चाई से बताता हूं, सारी संगत बैठी है, मैं हर वक्त ही यही ख्याल करता हूं कि ऐ पगला, तू क्या करता है? तुझे तो इस संसार से जाना है। आज तूने भजन में इतना नुकसान कर लिया है। आज तू संसारी बातों में इस–इस जगह उलझा ये–ये काम किया। तुझे तो संसार से जाना है। तू क्या लेकर जाएगा? बड़े–बड़े राजे, महाराजे चले गए। बड़े–बड़े विद्वान चले गए। बड़े–बड़े ठेकेदार चले गए। पर वे काला मुंह करके जाते हैं। आगे पुस्तक रखी और सत्संग सुना दिया। लोगों से पैसे ले लिए और अपने बच्चे पाल लिए। अपना पेट भर लिया, संसार का भला नहीं किया। इसे कहते हैं कबीर साहब–

पोथी तो थोथी भई, पंडित भये गुलाम।
भोजन वस्त्र चाहवें और मांगे रोकड़ी दाम।।

वह रोकड़ी दाम यही है कि वे अपना गुजारा कर लेते हैं।

उनकी पोथियां, थोथी ही रह जाती हैं। पोथियों में क्या रखा है? पोथी पर भी कोई चलता नहीं है।

आज कोई प्रेमी आया हुआ था। उस का गांव तो मैं भूल गया। बहुत अच्छा आदमी है। उसने कहा–मैं आर्य समाजी हूं। मैंने कहा–ताऊ ! मेरा सत्संग सुनकर जाना। आर्य समाज दूसरी ही वस्तु है। आर्य धर्म दूसरी वस्तु है। आर्य धर्म एक बार भी सुन लिया तो जीवन सफल हो जाएगा और वह आर्य धर्म तुम को यही बताएगा कि घर, बच्चे मत छोड़ो, तुम अपने ऐब छोड़ दो। जितने भी तुम्हारे ऐब हैं उनको छोड़ दो। यही बात संतमत की हैं। जितने भी मजहब हैं सभी यही बातें बताते हैं। इसलिए ही मैं कहता हूं कि यह हमारा पुराना धर्म है। इसी धर्म से हमारा कर्म बनता है। यह कर्म करने से ही हम चौरासी से बच जाएंगे, नहीं तो गिर जाएंगे। इसीलिए अगर तुम बचना चाहते हो तो अपना धर्म संभाल कर रखना। पर मैंने आपको बता दिया कि यह दो महीने की भी बात नहीं है। यह तो सात दिन का ही काम है। यह मैंने आपको प्रमाण देकर बता दिया है। अगर कोई जल्दी अभ्यास करना चाहता है तो अपनी मौत को याद रखो। उसे कभी भी मत भूलो। पर लोग तो मौत को याद नहीं रखते हैं और दूसरों की निंदा करते हैं। वे दूसरों के ऐब निकालते रहते हैं, परन्तु अपनी मौत को याद नहीं रखते हैं। कोई न कोई मुझे भी कह सकता है कि आप भी तो दूसरों की बुराई करते हो। नहीं मैं किसी की बुराई नहीं करता। मैं तो जो बातें होती हैं वे अपनी भी कह देता हूं। औरों की भी कह देता हूं। सीधी बातें ही जानता हूं कि अगर तुम तिरना चाहते हो तो आज के सत्संग की एक ही बात पकड़ लो। अब तो वे बातें समझ में आ गई होगी कि छः महीने का कोर्स है। नहीं छः मास का नहीं यह सात दिन का कोर्स है। यह काम राजा परीक्षित ने करके भी दिखाया था। पर बुद्धि पवित्र होनी चाहिए। विचार ऊंचे

होने चाहियें। जैसे ही तुम्हारे विचार ऊंचे और पवित्र होंगे उतनी ही जल्दी सुरत पहुंच जाएगी। आप पूछ सकते हो कि हमारे विचार पवित्र कैसे हों? क्या आप को यह भी पता नहीं है कि विचार पवित्र कैसे हों? गंदे विचार कभी भी मत रखो। अगर आप स्वामी जी महाराज की वाणी लेना चाहते हो तो स्वामी जी तो कहते हैं-

मनसा, वाचा, कर्मणा दुख काहूं मत दे।
ऐती रहणी सो रहे, वो ही शब्द रस ले।।

अब बताओ, मुक्ति होगी कि नहीं? यह क्या बताया है? जब शब्द का रस ले लिया तो मुक्ति हो गई। शब्द ही तो अमत है। जो अमत छका जाता है जो पांचामत लिया जाता है, यही शब्द ही तो है वह। उन पांचों धुनियों से आगे जाना पड़ता है। उस शब्द की कमाई करने वाला ही तिरता है। जिसे इस सारी दुनियां का कर्ता कहते हैं, यह वह राधास्वामी दयाल है। इसीलिए तो कबीर साहब कहते हैं–

अब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरू जुगत लखाई।

सतगुरू ने कौन सी जुगत बताई? अब आगे कहते हैं–

क्रिया कर्म आचार मैं छोड़ा, छोड़ा तीर्थ में नहाना।
सारी दुनिया भई सयानी, मैं ही इकऽ बौराना।।

अब मैं यह तो बार–बार कह देता हूं। उसने क्रिया कर्म कौन से छोड़ दिए? ये क्रिया कर्म मैं हवाला देकर भी बता देता हूं और आप करके भी देख लेना। काफी लोगों ने किया भी होगा। बहुत लोग क्रिया कर्म करते हैं पर वे क्रिया करते–करते ही गिर जाते हैं। उनकी दुर्दशा हो जाती है मैं किस की क्या कहूं? परसराम जी ने भी दोहा लिखा है। कई बार सुनाया करता हूं।

नाम लिया जिन सब किया, योग, यज्ञ आचार।
जप तप तीर्थ परसराम, सभी नाम की लार।।

सभी चीजें नाम के पीछे रह जाती हैं। नाम तो सारी दुनिया

की जान है। सो यही कहते हैं कि आचार, विचार मैंने तो सभी कुछ छोड़ दिया। उसने आचार विचार क्यों छोड़े? जप, तप, पूजा, पाठ क्यों छोड़े? इनकी वहां जरूरत ही नहीं हैं। वहां पर तो जरूरत एक सतगुरू के खोजने की है। यही एक दुर्लभ रत्न है। इसी रत्न को पकड़ लो। इस रत्न को यत्न से पकड़ा जाता है। ऐसे ही नहीं पकड़ा जाता है। वह यत्न कौन सा है? हर वक्त यही ख्याल बनाए रखो कि संसार से जाना है। जब कोई गलत काम होता दिखाई देता है तो याद कर लो कि जाना है।

मेरे महाराज जी एक मिसाल दिया करते थे। आप लोगों ने सुनी भी होगी। वे बताते थे कि एक राजा घूमने के लिये चला गया। कोई बूटी घिस रहा था। राजा वहां खड़ा हो गया। उसने राजा से पूछा कि आप कौन हैं? उसने बता दिया कि मैं राजा हूं। उसने कहा–राजन! बैठ जाओ। उसने राजा को उस बूटी में से थोड़ी सी पिला दी। उसने कहा–लो राजन ! प्रसाद ले लो। राजा ने वह प्रसाद ले लिया। वह बाकी सारी बूटी का भरा कटोरा पी गया। उसने भरा कटोरा पी लिया, राजा ने थोड़ी सी ही बूटी पी थी। पर राजा रात को सो ही नहीं सका। वह हजारों रानियों के पास में घूमता रहा। उसे सारी रात ही परेशानी रही। उसे थोड़ा सा भी चैन नहीं आया। उसने सोचा कि तेरी यह हालत है जब कि वह महात्मा तो भरा कटोरा ही पी गया था उसकी क्या दशा होगी? वह सुबह पहले ही महात्मा के पास पहुंच गया। देखा, महात्मा तो बैठा था। सो यह तो मैं आप को सात दिन का कोर्स बताता हूं। महात्मा मस्ती में बैठा था। राजा ने उसको बंदगी की। महात्मा ने कहा–आओ राजन, क्या बात है? राजा ने कहा–आज मैं तो आपके पास एक प्रश्न लेकर आया हूं। महात्मा ने कहा–बताओ। राजा ने कहा–महाराज ! प्रश्न यह है कि आपने मुझे तो थोड़ा सा ही अमत दिया था, जो आपने बूटी घिस रखी थी। मुझे तो सारी

ही रात शांति नहीं आई। मैं तो हजारों रानियों के पास घूमा। मुझे कोई थकान भी नहीं हुई। मैं तो यही पता लगाने आया हूं कि आपकी दशा क्या हुई होगी? आपके पास तो कोई रानी भी नहीं है। महात्मा ने कहा–राजन ! यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। इसका अजमूदा आप को मिल जाएगा। आप दो लड़कों को बुला लो। उनको बुला लिया गया। महात्मा ने कहा–इनको अच्छा माल खिलाओ और यह बूटी इनको भी पिला दो। सो वह घिसी हुई जड़ी बूटी उनको भी पिला दी। महात्मा ने कहा–अब आप इनको महल में ले जाओ। अब दो लड़की ला दो और उन्हें इनके पास इनके मकान में छोड़ दो। पर आप इनको शाम को ही यह कह देना कि दिन निकलते ही तुम्हारा सिर काट लिया जाएगा। दोनों का तुम्हारा सिर काटा जाएगा। इस काम के लिए ये दो जल्लाद बाहर खड़े कर दिए गए हैं। सूरज के निकलते ही तुमको मार दिया जाएगा। फिर आप मेरे पास आकर बात करना। राजा ने कहा–ठीक है। राजा ने वही काम कर दिया। दो जवान छांट कर बुलाए। उनको वह जड़ी बूटी पिला दी। कमरे में उनके पास दो लड़कियां भेज दीं। उनको यह आदेश भी दे दिया कि दिन निकलते ही तुम्हारे दोनों के सिर काट दिए जाएंगे। अब वे दोनों बेचारे रात को क्या कर सकते थे? सिर पीटते हुए पागल हुए पड़े रहे। उन्हें ये विचार खा गया कि दिन निकलते ही मार दिए जाएंगे। दिन निकला और दोनों को संभाला गया। उन लड़कियों से पूछ–ताछ की गई कि बेटी! बताओ, क्या बात हुई? लड़कियों ने कहा–महाराज ! हम तो आजाद बैठी हैं। हमारी तरफ तो इन्होंने नजर भर भी नहीं देखा। राजा ने कहा–ठीक है। अब राजा उस महात्मा के पास आया। महात्मा ने पूछा–राजन ! क्या आपको आजमूदा मिल गया है कि नहीं? राजा ने कहा–नहीं मिला। महात्मा ने कहा–अरे मूर्ख ! तुझे और क्या आजमूदा मिलेगा? अरे

मुर्ख ! जिसे मौत सिर पर दिखाई देती है, वह घटिया कर्म कभी भी नहीं करता है। जिसे अपने सिर पर मौत दिखती है, वह तो जल्दी ही अपने घर पहुंच जाता है। वह कभी भी देर नहीं लगाता है और जो ऐसा सोचते हैं कि भजन जब बनेगा, तब कभी बन जाएगा। हमारी मौत तो नहीं आएगी। औरों की ही आएगी। पड़ोसी मरते रहेंगे। हम तो नहीं मरेंगे। वे भाई कभी भी भजन नहीं कर सकते हैं और न ही उनकी सुरत चढ़ेगी। बात जो थी, वह मैंने आप लोगों को सही बता दी है। साधन अभ्यास तो वही कर सकता है जिसे यह पता है कि तुझे जाना है जो समझता है कि हो जाएगा दो दिन में चार दिन में, कोई बात नहीं फिर हो जाएगा। वह भजन कर ही नहीं सकता है कभी भी। तो आप यह भी पूछ सकते हो कि यह दशा कैसे बनेगी? यह दशा तो तुम्हें बनानी ही पड़ेगी। हर चीज का जिस–जिस को तुम ख्याल में रखते हो उसका स्वप्न आता है। अगर तुम हर वक्त ही मौत को याद रख लो, विचार में ख्याल में रख लोगे तो तुम काल और माया से बच जाओगे। तुम कभी भी धोखा नहीं खाओगे। यही राजा परीक्षित की कहानी थी और इस प्रकार की डबल कहानी (इससे प्रभावशाली) मुझे नहीं मिली। सो ही मैंने आपको यह बात बता दी और यही मुझे समझ आई कि जल्दी अभ्यास करने वाला इस प्रकार ही कर सकता है। सो यही मैं तुम्हें बताता हूं कि इन सभी क्रिया कर्मों से बचकर एक ही क्रिया को याद रखो। वह यही है, कि हमें जाना है। बस ! इस दोहे के कारण तो सहजो बाई को भी ज्ञान हो गया था। वह अपने सिर के बालों को गुंथवा रही थी और ससुराल से आये हुए थे। उसके भाई चरण दास जी थे। वे आ गये। चरणदास जी उसके गुरू भी थे। चरणदास जी ने उसको देखकर कहा–सहजो! आज यह क्या करती है? सहजो ने कहा–ससुराल वाले आए हैं और कल जाना है। सिर गुंथवा रही हूं। तब चरणदास जी ने

कहा– **सहजो !**

जाना है रहना नहीं, जाना बिश्वे बीस।
चार दिनों के कारणे, काहे गुंथावै शीष।।

अब यह दोहा उसके दिल में घर कर गया और वह महात्मा बन गई। सहजो की वाणी आप देखो। वह उस खुदा से मिली कि नहीं मिली। वह एक दोहे को लेकर अपना काम ही पूरा कर गई। वह भी सात ही दिन में। बल्कि वह तो चौबीस घंटे में ही अपना काम कर गई। वह तो रात को ही भाग गई और सुबह उसके ससुराल वाले देखते ही रह गए। अब उसका यह काम तो इस दोहे ने ही कर दिया। उसको इसने क्या मार की? यह भी उस राजा परीक्षित वाली ही बात थी। यही मैं आप लोगों को बताता हूं-

जाना है, रहना नहीं, जाना विश्वे बीस।
चार दिनों के कारणे, काहे गुंथावै शीष।।

अगर आप लोग भी यही सोच लोगे कि हमें भी जाना है, रहना नहीं है तो आप किसी को भी धोखा नहीं दोगे। धोखा पहले हम अपनी आत्मा को ही देते हैं। बाद में ही दूसरों को देते हैं। जब हम अपनी आत्मा को पवित्र कर लेंगे तो धोखा किसे देंगे। आत्मा धोखा नहीं खाएगी। वह कहेगी कि डूबता क्यों है? फिर हम दूसरे को भी धोखा नहीं देंगे। यह हालत कब आएगी? जब तुम नित नेम से अभ्यास में बैठोगे, तभी यह हालत आएगी। यह पता आप सबको ही है कि जाना तो सभी को पड़ेगा। पर भागी वही हैं जो अपने पल्ले में पूंजी लेकर जाता है। धन्य है उस माता को, जिसने संत सतगुरू पैदा किया है। महात्मा तो कहते हैं–

जननी जने तो भक्त जन, या दाता या सूर।
ना तो रहिये बांझड़ी, क्यों जन खोया नूर।।

पलटू साहब जी कहते हैं–

धन जननी जिन जाया है, सुत संत सखी री।
पलटू दास सोई सतवन्ती, जिन संतन गोद खिलाया है।।

वह भाग वाली है और सभी तुम भाग वाले बन सकते हो। यदि तुम मेरी इस बात को याद कर लो तो। यही दिमाग में बिठा लो, फिर तुम कोई भी काम गलत नहीं करोगे। मैं अपनी ही बीती हुई बातें बताता हूं। दूसरे की नहीं बताता हूं कभी। बाकी सभी आचार, व्यवहार तो यहीं रखने वाले हैं। कोई भाई अगर ये कहता है कि पूजा पाठ और होम–यज्ञ, दान–पुण्य, तीर्थ व्रत, स्वर्ग, वैकुण्ठों से आगे जाएंगे तो वे कोई इतिहास या प्रमाण लाकर दिखा दे। पर संत तो यही कहते हैं कि ये सब ही उरले व्यवहार के होते हैं। कबीर साहब ने तो यह भी कहा है–

पाप-पुण्य दोनों नहीं म्हारी हेली, निर्गुणियों के देश।

वहां पाप और पुण्य दोनों ही नहीं हैं। ये तुम्हारे शास्त्र तो पाप और पुण्य का ही रास्ता बताते हैं। बस, कहते हैं कि पाप करोगे तो नर्क में और धर्म करोगे तो स्वर्ग में जाओगे। वे यह तो नहीं कहते कि तुम इन दोनों से आगे भी चलो। यही कबीर साहब ने कितना सुंदर कहा है–

मेरा मनुवां माने नाहिं, मैं कैसे समझाऊं।
व्रत करूं तो पांचों रौवें, ना दोजख जाऊं।।
मक्का म्हारा काम क्या, ना गंगा न्हाऊं।
मेरा तो मनुवां माने नाहिं मैं कैसे समझाऊं।।
बन में जां तो कांटें लागैं, नाहक दुख पाऊं।
धूनी तपूं तो जीव जले, किस विध मुक्ति पाऊं।।
दान करूं तो फिर देह धारूं, ना चौरासी जाऊं।
भजन करूं तो मिलूं जोत में, इस विध मुक्ति पाऊं।।
मेरा मनुवां माने नाहिं, मैं कैसे समझाऊं।

सो उन्होंने सभी कुछ खोल कर बता दिया कि मेरा तो मन

नहीं मानता, मैं इसे कैसे समझाऊं? मन कब समझता है? जब तुम इस बात को याद रखो और अभ्यास करते रहो और शब्द की धुनी सुन कर यह मन काबू में आ जाता है। कोई यह भी कहता है कि मन को मारना है। नहीं, मन को मारना नहीं है। मारना तो कायरों का काम होता है। मन को तो बदलना है। मन को बदल लिया तो ठीक हो गया। अब ये मन कैसे बदलेगा? क्या नाम लेने से ही मन बदल जाता है? नहीं, यह तो दर्शनों से भी बदल जाता है। सत्संग सुनने से भी बदल जाता है।

मैं आपको एक मिसाल देकर बताऊंगा। एक भाई जीन्द के बहुत बड़े वकील हैं। इन्होंने आज तक नाम नहीं लिया है। पर इसके विचार बदल गए। इसने बताया कि मैं तीन लाख की शराब पी चुका। पर इसने नाम नहीं लिया। यह नाम लेने वालों से हजारों दर्जे बड़ा है। अब इनसे पूछो, क्या ऐब करता है? इसके सारे ही ऐब छुट गए हैं। ये ऐब किसने छुटवाए हैं? इसके विचारों ने ही छुटवा दिए। इसने क्या विचार किया? इसने यही सोचा कि मैं तो डूब ही गया जो तीन लाख की शराब पी गया। तीन लाख से बच्चों के लिए कुछ करता भजन या दान पुण्य कुछ करता। ये तीन लाख काम में आते। सो शराब पीना सब से बुरा है। जो शराब पीता है और पूंजी बरबाद कर देता है इससे बड़ा पापी और कौन होगा? पर फिर भी–

गलती में बनी सो बनी अब तो सोच समझ के चाल।
चोरी, जारी, अन्याय की नहीं कहीं पठशाल।।
बिना पढ़ाए सब कुछ पढ़ जां जितने थे कर्म चंडाल।।

अर्थात् दुष्कर्मों को तो अपने आप ही पढ़ जाते हैं। पर जो अच्छी बातें हैं, अच्छे कर्म हैं इनको सीखते सिखाते सिर दे देते हैं और मर जाते हैं फिर भी समझ में नहीं आते हैं। पर जिसका अधिकार होता है वह समझ भी जाता है। इसीलिए मैंने आपको

बताया कि सत्संग में जाकर पापी इस तरह से तिर जाते हैं कि उनके विचार ही बदल जाते हैं। जब विचार ही बदल गए तो जीवन भी बदल गया। जब जीवन बदल गया तो भजन भी बन जाएगा। फिर क्या होता है? भजन किसे कहते हैं? भजन सुमरन ध्यान इसको ही कहते हैं कि सारा जीवन ही बदल जाए। हमारे विचार पवित्र हो गए। अब आगे शब्द की धुनि सुनने की बात रह गई और उस परमात्मा के दर्शन करने की बात रह गई। मैं तो परमात्मा के दर्शन सब से बड़े यही मानता हूं कि जिसके विचार पवित्र हो गए और जिसका जीवन पवित्र हो गया। बाकी कुछ भी नहीं रहा है। जो बाकी रह गया है मैं आगे बता दूंगा। आगे कहते हैं।

कहता है कि मैंने क्रिया कर्म भी सभी छोड़ दिए और तीर्थ का नहाना भी छोड़ दिया। अब आप भी ये बता दो कि तीर्थ के नहाये कौन–2 नर तिर गए?

तिर ज्या क्यों न मेढंक मछली,जिनका गंगा ही में घर है।
तिरेंगे तो वही नर जिनके हृदय में हर है।
जटा के बढ़ाए नर कौन-कौन तिर गए,
तिर जा क्यों न मोर जिनकी लंबी-लंबी पर है।
राख के रमाए साधु कौन-कौन तिरगे,
तिरज्या क्यों न गधा, जिसका राख में ही घर है।
शंख के बजाए साधु कौन-कौन तिर गए।
तिरज्या क्यों न गधा, जिसका शंख जैसा गल है।
तिरेंगे तो वही नर जिनके हृदय में हर है।

वही आदमी तिरेंगे जिनके हृदय में हर है और वही अपना काम करके जाते हैं और बाकी सब आचार विचार यहीं रह जाते हैं। मैं इनकी बुराई नहीं करता। ये आचार–विचार तो ऐसे ही हैं जैसे एक पत्तल रख दी भोजन करने वालों के आगे साफ करके। अब उससे पेट तो नहीं भरता है। परसराम का दोहा मैंने आपको

बता दिया है। क्यों कि और महात्मा भी कहते हैं–

विद्या माहिं वाद है, तप माहिं ऋद्धि।
नाम माहिं मुक्ति, योग माहिं सिद्धि।।

मुक्ति तो नाम में ही है और सब तो उरला ही व्यवहार है। इनमें मुक्ति नहीं है। थोड़ी सी सिद्धियां आ जाएंगी। समझ लिया कि हम तिर गए और बड़े बन गए। क्यों बड़े बने? अरे ! तेरे साथी भी डूबेंगे और तू भी डूबेगा। इसीलिए वह घर तो बड़ी दूर है-

साधो बहुत दूर वह घर है।
क्या गावै कुछ समझ दिवाने मुश्किल गैब सिरर है।।

वह कितना कठोर है-

अनलहक कह हक को पहुंचा सूली चढ़ा मन्सूर।
दिवाने क्या गावै घर दूर।।

वह घर बड़ी दूर है। इन चीजों में वह घर नहीं है। (कंकरों पर गाहटा जोड़ने से बैलों के पांव फूट जाते हैं) ये तो कंकरों पर बैल घुमाने हैं। बिना निशाने की भक्ति काम नहीं देती है। भक्ति भी निशाने की ही काम देती है। तुम बाहर मिट्टी की मूर्ति बनाकर पूजते रहते हो, अंतर का पता ही नहीं है कि निशाना कहां पर है तो किस तरह से पहुंचोगे? इसलिए संतों ने तो अन्तर की ही बातें बताई हैं। मैं मंदिरों का खण्डन नहीं करता हूं। मैं कहता हूं कि मन्दिरों में तुम्हारा विश्वास नहीं है तुम काफी लोग झूठ बोल देते हो। मंदिरों में पुजारी है। मैं अपनी बीती हुई बातें बताता हूं। मैं तो मंदिरों में रहा हूं। हम किसी पुजारी से पूछ लें कि सुनाओ महाराज! कितना सामान है? अगर कुछ पड़ा हो तो भी कह देगा कि भाई सामान तो नहीं रहा, और ले आओ, तो फिर और सामान लाकर डाल देंगे। कह देंगे कि और मंगवा दो भई ! अब वे आधी बार तो झूठ ही बोलते हैं। उन्हें झूठ क्यों बोलना पड़ता है। उन्हें यही सोचना चाहिए कि जब तेरे पास दो दिन का सामान है तो तू

पहले ही क्यों मंगवाता है। तेरे पास सामान अपने आप ही आ जाएगा। यह भगवान हैं। पगला ! झूठ क्यों बोलता है। उन्हें परमात्मा पर ही विश्वास रखना चाहिए। वह अपने आप ही तो मंगवा लेगा। पर ये लोग विश्वास नहीं रख सकते हैं। विश्वास तो नाम देव ने रखा था, कहते हैं-

नाम देव तन त्यागन लाग्या, पिया दूध पत्थर है।

वह कभी मंदिर में ही नहीं गया था। वह तो अपने नाना के कहने से ही मंदिर में पूजा करने के लिए चला गया था। उसने वहां पत्थर को ही दूध पिला दिया। तुम्हारी ही साखें बताता हूं। पर क्या आज के जमाने में भी कोई बताता है कि किसी ने पिला दिया हो। हां मैं कहता हूं, अब भी पिला दिया है और अगर तुम पिलाना चाहते हो तो सभी पिला सकते हो। पर तुम पिलाते नहीं हो। तुम पत्थर को दूध किस तरह पिलाओगे? अरे ! तुम तो अपने मां–बाप को ही दूध नहीं पिला सकते हो। पत्थर को दूध कैसे पिलाओगे? पत्थर को भी दूध केवल वही पिला सकता है जो अपने मां–बाप को दूध पिला सकता है।

जरा सोचो ! मैं क्या कहता हूं। जो अपने मां–बाप को दूध नहीं पिला सकता जो स्त्री अपने पति को दूध नहीं पिला सकती है और जो पति अपनी स्त्री को ही दूध नहीं पिला सकता है वह पत्थर को दूध कैसे पिलाएगा। ऐसा कोई प्रमाण हो तो बताओ। मैं गलत बोलता हूं तो मेरे सामने आ जाओ। मैं आपको बताता हूं कि पत्थर को दूध नहीं पिला सकते हैं। सो ऐसे आदमी औरत तो अपना काला मुंह करके ही चले जाते हैं। वे धोखा दे रहे हैं। अगर हम बुजुर्गों की सेवा करेंगे तो हमारे पास सब कुछ हो जाएगा। इसीलिए बताया है कि ये जप–तप, पूजा–पाठ और दान–पुण्य तो सारे ही भुला दिए हैं, अब इनको करने वाली तो सारी दुनिया ही सयानी है और एक मैं ही बावला हूं। कबीर साहब कहते हैं कि मैं

ही एक बावला आदमी हूं। क्योंकि मैंने तो ये संसार के सभी व्यवहार छोड़ दिए हैं। मैंने तो एक ही व्यवहार रखा है। वह कौन सा है? वह तो वही है–

एक साधे सब सधैं और सब साधे सब जाहिं।
कहे कबीर अब सोच समझ मन माहिं।।

अर्थात् एक का साधन करने पर इन सभी का साधन हो जाता है। वह एक साधन किसका? वह एक साधन शब्द का है। वह परमात्मा एक ही है। उसका सहारा लेने पर दूसरे सहारों का साधन प्राप्त हो जाता है। आगे फिर कहते हैं-

ना मैं जानूं सेव बंदगी, ना मैं घंट बजाई।
ना मैं मूर्ति धरी सिहांसन, ना मैं पुष्प चढ़ाई।।

अब कहते हैं कि न तो मैंने फूल चढ़ाए हैं और न ही मैं आरती ही उतारता हूं। न मूर्ति ही सिंहासन पर रखी है। उनकी साखी जैसी मैंने सुनी है वे बातें बता देता हूं। क्या उसके गुरू ने इस तरह की बातें उसे पूजा के बारे में नहीं बताई? यहां समझदार आदमी चाचा साधूराम जैसे हैं, इन्होंने भी तो ये बातें सुनी होंगी? इन्होंने यह कथा भी तो सुनी होगी। कबीर साहब के गुरू तो आचार्य रामानन्द जी थे। मूर्ति को कपड़े पहना दिए, सारा काम कर दिया और वह माला पहनानी भूल गया। अब माला पहना दी तो निकाले कैसे? कपड़े तो पहले ही पहना दिए। इस तरह की कोई बात थी। अब अगर माला निकाली जाती है तो सब कपड़े भी तो हटाने पड़ते। वे उदास होकर खड़े हो गए। जब वे खड़े हुवे तो कबीर साहब ने उनको कहा कि महाराज जी! उदास क्यों हो गए? आप पीछे जाकर सुमेर की गांठ को खोल लो और इस गांठ को खोल कर इसे ऊपर ला कर बांध दो। माला को निकालने की तो जरूरत ही नहीं है। अब आप बताओ। मैं कबीर साहब के बारे में ही बातें बता रहा हूं। अब महाराज रामानन्द जी ने कबीर को

कहा–कबीर साहब ! कल मेरे दादा का श्राद्ध है। कबीर साहब ने पूछा–क्या वह जीवित है या मर गया है? रामानन्द जी ने कहा–वह तो मर गया है उसे मरे हुए तो कई वर्ष हो चुके हैं। कबीर साहब ने कहा–महाराज ! उनके श्राद्ध पर क्या होगा? रामानन्द जी ने कहा–खीर बनेगी और ब्राह्मणों को भोजन कराना है। अब कबीर साहब चले गए। उन्होंने कहा–दूध तो मैं ही ले आता हूं। तब कबीर साहब जाकर हिंडोलनों में खड़ा हो गया। अब उन्हें बारह बज गए। तब वे बाल्टी ले कर आए। रामानन्द जी ने कहा–अरे दुष्ट ! तूने आज ये क्या किया? आज श्राद्ध था और तू दूध नहीं लाया। उसने कहा–महाराज जी! मैं तो सुबह ही जाकर बैठा था। मैं क्या करूं? दूध दिया ही नहीं। उन्होंने पूछा–तू गया कहां था? कबीर साहब ने कहा–मैं हिंडोलनों में गया था। वहां पशुओं की हड्डियां पड़ी थीं। रामानन्द जी ने कहा–वहां दूध कहां से आ सकता था? कबीर साहब ने कहा–वहां पशु तो मरे हुए पड़े थे वहीं से तो लेने गया था। रामानन्द जी ने कहा–क्या मरे हुए पशु भी कभी दूध दिया करते हैं? कबीर साहब ने कहा–महाराज ! क्या कभी मरे हुए भी भोजन करने आते हैं? अगर आपने भोजन ही कराना है तो कल परसों कभी भी भोजन करवा देना। इस धोखे में क्यों आते हो कि मरे हुए ही भोजन करने के लिए आ जाएंगे। अब वे मरे हुए तो अपनी जगह पर जहां जाने थे चले गए और यही बात तुम्हारी, महाराज तुलसी साहब की घट रामायण कहती है। अगर तुम उसे देखो तो बड़ा न्याय ही कर रखा है और बड़ी अच्छी प्रकार से बताया है। मैंने सुनी थी। सो मैं यह बताता हूं कि धर्म पुण्य करना बुरी चीज नहीं है। भोजन खूब खिलाया करो। श्राद्धों में कोई जरूरी नहीं है। किसी भी खाली दिन कभी जिमा दो। भूखें, प्यासों को भोजन करवाओ। खूब भोजन खिलाया करो। कनागत तो महाराजा कर्ण ने ही बनाए थे। इसी कारण से तुमने

इनको बड़ा मान लिया है। पर भोजन करवाया करो। तुम यह न सोचना कि यह हमारे मुर्दों को मिल जाएगा। यह तो जो भी करेगा उसे ही मिलेगा।

गरीबदास जी कहते हैं कि जो दान करता है उसे ही मिलता है। आप के नाम से कर दो या अपने बाप, दादा के नाम से कर दो। मुझे तो इतनी ही जानकारी है। मेरे तो ऐसे ही विचार हैं कि जरूर भी किसी के नाम से मिलता होगा। पर नहीं। जो करता है उसी को ही मिलता है। किसी मरे हुए की चिट्ठी तो आई नहीं है। सो ही उन्होंने कहा है कि मैंने न तो घंटा ही बजाया है और न टाली बजाई मैंने तो कुछ नहीं बजाया। मुझे तो एक ही बात का पता है कि उस एक मालिक का ही पता है। उस मालिक की ही टाली बजाई। वह मालिक ही सब के अंदर बैठा है। उसकी आरती में सभी की आरतियां आ जाती हैं। हाथी के पांव में सब के पांव समा जाते हैं। सो बाकी तो कुछ भी नहीं रहता है।

इसीलिए सारी दुनिया का तो पता नहीं है। मैं तो उस कुल मालिक को ही याद करता हूं। उसके ही याद करने से तुम्हारा भी जीवन सफल हो जाएगा। वह सभी के अंदर बैठा हुआ है। आप पूछोगे–वह कैसे अंदर बैठा है?

ज्यों तिल में तेल है और ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझ में, तू जाग सके तो जाग।।

वह मालिक तुम्हारे अंदर बैठा है। पर हम ही नहीं जागते हैं। हमारे कानों पर मोहर लगी है। कभी हम उन मोहरों के हटाने की कोशिश ही नहीं करते हैं। अगर कोशिश करो तो ये इस तरह हट सकती हैं कि दढ़ विश्वास करके यही सोचो कि बड़े–बड़े चले गए हैं और हम भी जाएंगे। बहुत ही बड़े–बड़े चले गए हैं। तुम अपने ही घरों में निगाह करके देखो, उनके नाम लो। वे चले गए और हमने भी जाना है। हम भी जल्दी ही जाने वाले हैं। बस ! फिर तिर

जाओगे। ये बातें तुम्हारे दिमाग में अगर बैठ जाती हैं तो। आगे कहते हैं–

जो ये मूर्त मुख से बोले, कर अस्नान न्हवाई।
पांच टके की देय ठठेरा, एक ही और ले आई।।

अगर ये मूर्ति बोल पड़ती है तो मैं एक और भी ले जाऊं और उसकी भी आरती उतारनी शुरू कर दूं। पर यह मुंह से तो बोलती ही नहीं है। जो मुंह से बोलता है और तुम्हें आर्शीवाद देता है, उसको तो तुम ठोकर मारते हो और जो तुम्हारे से बोलता नहीं है उसके आगे रोटी रखकर उन्हें आप खा लेते हो। तुम उसको भी धोखा देते हो। उसके आगे प्रसाद लगा दिया। उसके आगे रोटियां रख देते हो और थोड़ी देर बाद उन्हें आप ही खा लेते हो। उस माल को। घर पर बूढ़ी मां और बूढ़ा बाप, बूढ़े सास, ससुर हैं, उनको हम ठोकर मारते हैं। इससे बड़ा जुल्म और क्या करोगे? तुम मालिक को धोखा देते हो और फिर अपने आपको सत्संगी भी कहते हो। फिर आकर पूछते हो कि मेरा परदा नहीं खुलता है। मैं कहता हूं कि तुम्हारा पर्दा कैसे खुलेगा? तेरा पर्दा तो यमराज ही खोलेगा कभी न कभी। क्या तुम खोलना चाहते हो? अगर तुम अपना पर्दा खोलना चाहते हो तो अपने बुजुर्गों का कहा मानो। उनकी सेवा करो, उनको ही नहलाने धुलाने की कोशिश करो। वे तुम्हारा बेड़ा पार कर देंगे। उससे ही तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। सुबह–सुबह उठकर अपने बुजुर्गों को नहलाने की कोशिश किया करो। उनसे ही बेड़ा पार होगा। मूर्ति तो न ही बोलती है, न चलती है। वह तो कुछ भी नहीं करती है। पर यह बात जरूर है। तुम उनकी रस्म रिवाज करते रहो। जो कोई घर में हो तो फैंकों मत। वे अपने घरों में हैं जैसे भी करो। पहले अपने मां–बाप की सेवा करो, जिन्दा जागते और सबसे बड़े देवता तुम्हारे वे ही हैं। सास–ससुर हैं। इनकी सेवा किया करो। वे तो तुम पैसों से और

भी ले आओगे। पर मां–बाप तो पैसों से और नहीं आ सकते हैं।

सोचो, कबीर साहब यही तो कहते हैं कि यह मूर्ति तो मैं एक और ले आऊंगा अगर बोल पड़ती है तो। पर बोलने वाले मां–बाप पैसों से नहीं मिलते हैं। यूं तो मैं भी ले आऊं, मेरी मां कोई न कोई, अगर मिलती हो तो। मैं भी मां के बिना बहुत ही दुख पाया हूं। मैं भी तो ले आऊं और उसकी मैं सेवा भी करके दिखा दूं। वैसे तो पता नहीं असंख्य मां हैं। पर तुम तो मानोगे कि मां तो मां ही होती है। सो जो अपनी मां की सेवा कर लेता है वह बड़ा भागी है। स्वर्ग तो उसके पैरों के नीचे रहता है, जिस स्वर्ग की तुम बड़ाई करते हो। ये सनातन धर्म वाले, वह जो अपने मां–बाप की सेवा करता है, स्वर्ग उसके पांव के नीचे ही रहता है। ऐसा तुम्हारी पुराण कहती है। सो तुमने तो आगे चलना है इनको छोड़ कर। इनकी सेवा करो और फिर अभ्यास करो। अभ्यास करके अपने घर पहुंचो। यह पूछोगे कि क्या अभ्यास करें। अगर कोई जूती पहनना छोड़ देता है तो उसका भी यह अभ्यास हो जाता है। कपड़े पहनने जो छोड़ देता है तो यह भी एक अभ्यास है। नहीं, तुम सुरत शब्द का योग करो। जब तुम आत्मा को परमात्मा से मिला लोगे या सुरत को शब्द के साथ में जोड़ लोगे तो यही मिलाप है। योग मिलाप ही होता है। जब इसका मेल हो जाएगा तो इसे ही तो सहज–योग कहते हैं। उनका जीवन ही सफल हो जाता है। यही सबसे बड़ा क्रिया कर्म है। यही सब से बड़ी भक्ति है। और जितनी भी चीजें बताई हैं वे सब की सब नीचे रह जाती हैं। आगे कहते हैं-

ना हरि रीझे जप तप कीन्हे, ना काया के जारे।
ना हरि रीझे धोती छोड़े, ना पांचों के मारे।।

अब मैंने तो गीता सुनी थी। मुझे ये तो पता नहीं कि ये किस अध्याय में हैं। कष्ण जी ने भी कहा है कि मैं जटा बढ़ाने और राख रमाने से राजी नहीं हूं। न ही सन्यास लेने से ही राजी होता हूं।

तो फिर वह किस चीज से राजी होता है? अब बताओ। वह तो भक्ति से ही राजी होता है। वह भक्ति कौन सी है? भक्ति आप जानते हो कि असली भक्ति तो वही है कि उस मालिक, कुल मालिक को हम प्रगट कर लें। पर वह बाहर जंगल पहाड़ों में तो नहीं मिलता है वह तो हमारे अंदर ही है। उसे अपने अंतर में तलाश करो। वह मिल जाएगा। तुम तो चिल्लाते फिरते हो। वह बाहर नहीं मिलता है। जिसको भी वह मिला अपने अंतर में ही मिला।

मैंने एक जगह पर देखा। किसी ने गरीब साहब से प्रश्न किया कि, महाराज जी ! ध्रुव को परमात्मा के दर्शन कहां हुए? उन्होंने बताया कि ध्रुव को परमात्मा के दर्शन त्रिकुटी में ही हुए। उसे भी कहीं बाहर नहीं हुए। कोकलाबन तो त्रिकुटी में ही है। इसी तरह से कबीर साहब के बारे में कहा गया है। कबीर सहाब तालाब के किनारे मिले, वे कबीर साहब तुम्हारी पलकों के अंदर नैनों के अंदर बैठे हैं। यही तो वह तालाब है। और ये आंखों की पूतली यह तालाब है यहां तो फूल हैं। यहां कबीर साहब का वासा है। यही कबीर साहब जी ने कहा है-

आजा सतगुरू नैनन में, नैन झांप मैं लूं।
ना मैं देखूं और को, ना तोहे देखन दूं।।
नैनन की कर कोठड़ी, पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डारके, प्रीतम को लेऊं रिझाय।।

इन पलकों की चिक डाल ले और प्रीतम को रिझा ले। जैसे बुरका पहन कर हमारे मुसलमान भाइयों की लड़कियां चलती हैं। इसी तरह तुम्हारे ऊपर भी बुर्का पड़ा हुआ है। बुर्का उठा कर देखोगे तो सब कुछ ही दिखाई दे जाएगा। यदि बुर्का पड़ा रहा तो कुछ भी दिखाई नहीं देगा। फिर इन छोटी–छोटी झांकियों में से दर्शन नहीं होते हैं। सो ये तुम्हारे ऊपर बुर्का पड़ा हुआ है। इसे परे

हटा दोगे तो सतपुरुष दिखाई दे जाएगा। शब्द भी सुनाई देगा। और प्रकाश भी दिखाई देगा। तुम्हारा ये बुर्का किसी पर मान, गुमान का है। किसी पर धन व जायदाद का बुर्का है किसी पर रूप औहदे का बुर्का पड़ा हुआ है।

मान बड़ाई जमपुर ले जाई, होए रहो दासन दासा।
मन मगन भये का सुन रासा।।

जब ये बुर्का उतर जाता है तो सभी मग्न हो जाते हैं, यह सुरत तो निर्मल पवित्र ही होती है। प्रकाश भी दिखाई दे जाएगा और शब्द भी सुनाई दे जाएगा। बुर्का हटाने का यत्न यही है कि दोनों वक्त अभ्यास और सुमरन किया करो। सुमरन भी कौन सा करेगे? ये राधास्वामी नाम की अठारवीं मंजिल की धुनि है। जब तुम उस मंजिल का ध्यान करके सुमरन का अभ्यास करोगे तो उस घर में जरूर पहुंच जाओगे। पर पहुंचने की बातें मैं पहले ही बता चुका हूं। आगे कहते हैं–

दया राख धर्म को पाले, जग से रहे उदासी।
अपना सा जीव सबन का समझे, ताहिं मिले अविनाशी।।

अब जितनी बातें कही गई हैं, उन सब के लिए एक ही साखी काम दे जाएगी। वह कौन सी साखी है कि दया रखो।

मेरी छोटी उम्र थी और महात्माओं का संग किया करता था। हमारे गांव में एक महात्मा आ गया। मेरा उससे बहुत प्यार था। एक 130 वर्ष का साधु था। उसने वह मंदिर में से निकाल दिया। अब बात चली, मैंने उनसे कहा–महाराज ! आप तो बहुत बड़े महात्मा हो। पर मैंने तो यही सुना है कि दया बिन सिद्ध कसाई। जब आदमी के अंदर दया ही नहीं है तो चाहे कितनी ही सिद्धि प्राप्त करे, वह सिद्ध महात्मा भी कसाई के समान है। आपने कोई दया नहीं की। आपने बूढ़े साधु को निकाल दिया ये क्या बात हुई? मैं आपको सच बताता हूं। मेरे गांव के भी आए हुए होंगे।

उनसे जाकर पूछ लो। उसने कहा कि बात आपकी बिल्कुल ठीक है। मेरा तो उसके साथ प्यार था। वह खाकी बाबा जी थे। उसने उस साधु को वापिस बुलवा लिया। यही कहा है कि दया राख धर्म को पालो। जब तुम्हारे पास में दया ही नहीं है तो फिर तो तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है। दया के बिना तो सिद्ध–पुरूष भी कसाई है।

पर दया किसे कहते हैं? किसी प्रेमी ने ये बात भी पूछी। मैंने उसी से पूछा कि तू खुद ही बता। उसने कहा–अगर आपके घर में आकर डंक अगर मार दे तो क्या तुम उस पर दया करोगे? एक शेर आ जाता है। तो क्या तुम उस पर दया करोगे? कोई हड़खाया, डाकी (पागल) आ जाए तो क्या तुम उस पर दया करोगे? मैंने कहा–बिल्कुल दया नहीं हो सकती है। तू सोच ले। उसने कहा कि मैं तो बता दूंगा। अब तू यह भी बता कि एक सांप है वह दस आदमियों को खा जाता है या दो चार को खा जाता है। सो उस सांप की तो कोई कद्र (मूल्य) नहीं है। आदमी की कद्र (महत्त्व) है। सो आदमी को बचा लो और सांप को मार दो। यही दया है। उस आदमी को बचा लिया तो बड़ा भारी पुण्य होगा। एक शेर आ जाता है जो आदमियों को मार रहा है। सो आदमी का चोला तो अमूल्य है। जानवर तो बहुत मिल जाएंगे। उस शेर को मार कर आदमी को बचा लो। यह दया है। अब तू बेशक इधार का पक्ष ले ले। इस आदमी के चोले को तो देवी–देवता भी तरसते हैं और जो मानस चोले को बरबाद कर रहा है उसको अगर मार दिया जाए तो कुछ भी पाप नहीं है। उस आदमी का भी भारी पुण्य होता है। वह तो हैरान हो गया। उसने कहा–यह बात तो मैंने कभी भी नहीं सुनी थी। मैंने कहा–तू अब इस पर सोच–विचार कर ले। मैं तो पढ़ा लिखा और सयाना नहीं हूं। मैंने आपको यही बताया है कि आदमी का शरीर तो इतना महान हो सकता है कि

वह सारी दुनियां का ही उद्धार कर सकता है। उसको अगर सांप डसता है और उसको अगर बचा लिया जाता है तो बड़ा भारी पुण्य हो जाता है। उस सांप को मारने का कोई पाप नहीं है। अगर एक बड़ा भारी महात्मा है उसको कोई शेर या डाकू घेरे हुए है। उसको वह मारता है और आपने उसको बचा लिया है। उस शेर को मारने का कोई भी पाप नहीं है। उस महात्मा के बचाने का भारी पुण्य है। अब एक डाकी है वह गांव में आकर भारी नुकसान कर देता है उसको मार दिया जाता है तो कोई पाप नहीं है। उससे अनेक आदमियों की जानें बच जाती है। सो यह पाप नहीं होता है। अगर हिसाब लगाया जाए और उस पाप के मुकाबले उस पुण्य को देखा जाए तो हम बचे रह जाते हैं। उसने कहा कि बिल्कुल ठीक है। सो दया रख कर धर्म को पालो।

धर्म पालने का मतलब क्या है? अगर कोई कहता है कि हम तो राधास्वामी मत के हैं और धर्म को पालते हैं। या हम कबीर पंथी हैं, हम धर्म पालते हैं या हम आर्य हैं, हम धर्म पालते हैं। धर्म का पालन करना तो बड़ा कठिन कार्य है। धर्म का पालन कर लिया तो जीवन ही सफल हो जाता है। हमारा पहला धर्म तो यही है कि अपने सदाचार को बनाए रखो। दूसरा धर्म यह है कि अपने बुजुर्गों को धोखा मत दो। तीसरा धर्म यह है कि तुम शराब–कबाबों से बचो। यह तो बड़ा भारी पाप है। चौथा धर्म हमारा यही है कि हमें संसार में भार बन कर नहीं रहना चाहिए। हमें फूल बनकर रहना चाहिए। किसी को भी दुख मत दो। अगर तुम्हें कोई दुख देता है तो तुम फिर भी शांति की बातें करो। वह मालिक आप तुम्हारी मदद करेगा। मैं तुम्हें कितनी बातें बताऊं? धर्म के पालने की। आगे और भी बातें रह जाती हैं। अगर तुम धर्म को ही पालते हो तो तुम्हारा धर्म यह भी तो है कि तुम सतगुरू की शरण लो। इस धर्म को निभाओ और फिर यह भी धर्म है कि तुम नाम लिए

बैठे हो, तुम सभी दोनों वक्त ध्यान में बैठा करो। यह भी तुम्हारा धर्म है। पर इस धर्म को भी नहीं पालते हो। क्या पालते हो? तो फिर क्या तुम सतखण्ड में पहुंच जाओगे? तुम फिर क्या करोगे? नाम तो ले लिया है जैसे डाक्टर से दवाई ले आए और वह दवाई लाकर आपने ताक में रख दी है और डाक्टर को गालियां देते फिर रहे हो। कहते फिरते हो कि डाक्टर ने दवाई दी थी लेकिन मुझे तो आराम ही नहीं आया। अगर कोई पूछे कि क्या दवाई खाई थी? कहता है कि नहीं खाई। अरे भले आदमी ! बिना खाए आराम कैसे आयेगा? अरे ! नाम लेने से तो नहीं तिरोगे।

सत्संगियो नाम लेने से नहीं; काम करने से तिरोगे। यह तुम्हारा धर्म है। नाम लिया है तो नाम की कमाई भी करो। फिर भी अगर तुम्हारे विचार ठीक नहीं हों तो सतगुरू को उलाहणा दो। साधन अभ्यास पर तुम दो मिनट भी नहीं बैठते हो। तुम और भी तो दुनियां भर के काम करते हो। आज मैंने टेलीविजन नहीं देखा। आज में उस फलां जगह नहीं गया। आज मैंने फलां काम नहीं किया। आज एक भी घूंट शराब की नहीं ली। अरे, भले आदमी! ये बातें तो तेरा नाश करने वाली हैं। तू कम से कम तेरा जो भला करती है उस चीज को देख। टेलीविजन तो तेरे अंदर है जो हर वक्त चलता रहता है? उसको देख।

पलक मारन की देरी। सुभान अल्ला कुदरत तेरी।

वह तो ऐसा टेलीविजन चलता रहता है जिसे न बिजली की ही जरूरत है न और किसी कनेक्शन की ही जरूरत है। उसे तो अपना खुद का कनैक्शन छठे चक्कर पर जोड़ना पड़ता है। उसको हर वक्त देखते रहो। टेलीविजन तो यह है। तुमने अपना जो धर्म था, वह तो छोड़ दिया। जिन्होंने नाम लिया है, उन्हें दोनों वक्त ध्यान पर बैठना चाहिए। सतगुरू तुम्हरी मदद करेगा। ये बातें कहता–कहता रह गया था। तुमने किसी ने ख्याल भी किया

होगा। सतगुरू तो एक है, वह कैसे सब को संभालेगा? सो वह सतगुरू एक नहीं है। वह तो कुल मालिक है। वह जर्रे–जर्रे में हैं। जहां देखोगे, वहां सतगुरु ही नजर पड़ेगा। इसलिए उस सतगुरू की तलाश करो। वह सतगुरू शब्द में समाने पर, शब्द स्वरूपी बनने पर ही मिलेगा। शब्द कमाया हुआ कोई गलत बातें नहीं कहेगा। स्वामी जी ने कहा–

शब्द कमावे सो गुरू पूरा। उन चरणन की हो जा धूरा।।
और पहचान करो मत कोई। लक्ष अलक्ष न देखो सोई।।
शब्द भेद लेकर तुम उनसे। शब्द कमाओ तन मन से।।

वह नहीं कहता कि तुम रूंड मुंड हो जाओ या जटा रखाओ। काला पहनो या सफेद पहनो। वे कहते हैं कि शब्द की कमाई करो। खुद हमारे ऋषियों की जो पुरानी चाल है उसी पर चलेगा। अब तो सभी चाल बदलते जा रहे हैं। किसी की हिम्मत है तो अन्तर की मंजिलों को बदल कर दिखाओ। जैसे कबीर साहब ने शब्द में 18 मंजिलों का वर्णन किया है। उन मंजिलों को कोई नहीं बदल सकता है। अंतर की धुनि कोई नहीं बदल सकता है। जो ऋषियों की चाल को बदलते हैं, क्या वे पापी नहीं हैं? हमारे ऋषियों में दादू, पलटू, रैदास में कौन सा घूंघरूं बांध कर नाचा था? मीरा का नाम ले देते हैं कि **मीरा बांध घूंघरू नाची।** मीरा तो कष्ण की भक्त थी। मीरा ने तो कष्ण को प्रगट कर लिया। जो झूठा नाम लेकर नाचते हैं वे दुष्ट हैं। कहते हैं कि उन्होंने अपना गुरु प्रगट कर लिया। जब गुरू प्रगट हो गया तो फिर वे भीख क्यों मांगते हैं? अपने चेलों का धन लेकर खाना तो पाप है। जैसे हिन्दू को गौ और मुसलमान के लिए सूअर है। मैं सीधी बातें कबीर साहब की कहता हूं। परम्परा की बातें बताता हूं कि किसी महात्मा ने ऐसा कुछ वर्णन किया हो तो मेरे सामने आ जाओ। अभ्यास तो करते नहीं हैं, अपना काला मुंह कर लेते हैं। अपना

जीवन बरबाद कर लेते हैं। इस तरह अपने अगले–पिछले दोनों को ही बिगाड़ लेते हैं। गुरू चेला दोनों ही नर्क में पहुंच जाते हैं। इसे ही कहते हैं–

लोभी गुरू लालची चेला, दोनों नर्क में ठेलम ठेला।

बचना चाहते हो काल से तो सतगुरू पूरा खोज। शब्द भेदी सतगुरू की तलाश करो। पर मैं आपको बताता हूं कि कबीर साहब क्या कहते हैं?

दया राख धर्म को पाले, जग से रहे उदासी।
अपना सा जीव सबन का समझे, ताहि मिले अविनाशी।।

दया के बारे में मैंने पहले ही बता दिया है। धर्म को पालो। धर्म तो मैंने बहुत ही बता दिए हैं। पर तुम्हारा बड़ा धर्म तो यही है कि शराब न पीओ और मांस न खाओ। अंडे न खाओ। इनसे भी बड़ा धर्म है कि दोनों वक्त ध्यान में बैठो। हमारे बुजुर्ग इसको संध्या कहा करते थे। हम उसको ध्यान कह देते हैं। दोनों वक्त उस मालिक की बदंगी में बैठो। तुम अपने धर्म का पालन भी करो। संसार से उदास रहो। उदास का अर्थ है कि हमें घटिया बातों को कभी विचार नहीं देना चाहिए। पवित्र बातें ही सोचनी चाहिएं। अच्छी–अच्छी बातें अपने दिमाग में बैठानी चाहिएं। और फिर जो अपने जीव जैसा दूसरे का जीव समझ लेगा तो वह किसी को दुख ही नहीं देगा। तो तुम देखो इस दोहे को सुनकर परमात्मा मिल गया कि नहीं? ये तो दो महीने का भी कोर्स नहीं है। ये तो थोड़े ही दिन का कोर्स है। अगर इस दोहे को ही दिमाग में बिठा लोगे तो काम बन जाएगा। यह तो राजा परीक्षित से भी जल्दी काम बनने की बात है। जैसे पहले भी बताया था कि अपना सा जीव सब का समझो।

मनसा वाचा कर्मना, दुख काहू मत दे।
ऐती रहनी जो रहे, सो ही शब्द रस ले।।

मुक्ति हो गई और जीवन सफल हो गया। इसको संत महात्माओं ने पवित्र रहनी बताया है। आगे कहते हैं–

सहे कुशब्द वाद को त्यागै, छोड़े गर्व गुमाना।
सतपुरूष ताहि को मिलिए, कहे कबीर सुजाना।।

सुना नहीं कबीर साहब कहते हैं, वाद–विवाद में झगड़ा फैल जाता है। वाद–विवाद कितना है? जैसे मैंने कहा–

विद्या माहिं वाद है तप माहिं ऋद्धि।

सो वाद–विवाद छोड़ देना चाहिए। कबीर साहब जी ने उसके विषय में बड़ा ही अच्छा कहा है। पर हम उस पर अमल नहीं करते हैं। दूसरे के कुशब्द को सहना और वाद–विवाद को त्यागना है। हम वाद–विवाद में अपना जीवन बिगाड़ लेते हैं। वह एक कहता है और हम दो कह देते हैं। वह दो कहता है, हम चार कह देते हैं। जिसे शब्द का रस मिल जाता है वह ब्रह्म में लीन हो जाता है। उसे तो किसी की भी बातें सुनने का होश ही नहीं रहता है। वह तो अपनी भी मुश्किल से ही कह पाता है। सो कुशब्द को सह ले और वाद–विवाद को त्याग दे। अभिमान को छोड़ दे। आपने सुना है–

मान बड़ाई गर्व ईर्ष्या, सुगरा हो सो त्यागे।
बिन त्यागे हर ना मिले, पाप काया को दूना लागे।।

यही हर एक महात्मा कहता है। कबीर साहब ने भी कहा है-

हरिजन तो हारा भला, जीतन दे संसार।
हारा सो हर से मिला, जीता जम के द्वार।।

अर्थात् संसार को जीतने दो, हम तो हारे ही भले हैं। हमें तो वाद–विवाद की जरूरत ही नहीं है। हम तो अपना काम करने के लिए ही आए हैं। अपना काम तो वही भागी करता है जो इस शब्द के अनुसार चलता है। कबीर साहब ने तो कहने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। वे कहते हैं–

नमो-नमो सतपुरुष को नमस्कार गुरू कीन्ह।
सुर नर मुनिजन साध्वा संतां सर्वस दीन्ह।।
गुरू की महिमा क्या कहूं, साख भरैं सैं वेद।
बिन सतगुरू नहीं पाइए, अगम पंथ का भेद।।
आए थे किस काम को, कर बैठे के बात।
के मुख ले मिलिए राम से, खाली दोनों हाथ।।
बणज कैसा किया रे, औ सौदागर ब्यौपारी।
.....औ लालों के व्यवहारी।।
बौदी गूण बैल हैं बूढ़े, बोझा भर लिया भारी।
जाना दूर पहुँचना मुश्किल, मूर्ख नाहिं बिचारी।
आगे एक ठगों की नगरी, वहां जा बालद डारी।
तू तो भोंदू पड़के सो गया, खेप लुटा दई सारी।
साहूकार की पूंजी लाया, देनी नहीं बिचारी।
आगे की तेरी पड़त उठ गई, कौडी नहीं उधारी।
किसे नै भरली लौंग सुपारी, किसे नै सांभर खारी।
संता भर लिया नाम हरि का, बिष बणजै संसारी।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, खोटी नीत तुम्हारी।
जग में निदा राजा डांटे, आगे जमपुर तैयारी।

हम सौदागर आये जी म्हारी हाट अगम के घाटै।
पहले वा वस्तु मिलेगी, पीछे पूर्ण बांटै।
सुरत-निरत के बणें तराजू, काण रति ना कांटै।।
इस वस्तु में बहुत नफा है, सो धरती के बांटे।
दुविधा दुरमत कदे ना व्यापै, कर सौदा मत नाटै।।
ऊंचे चढ़के संत पुकारै, रे जग तू मत नाटै।
जैसे दाम गिरह से खर्चे, वैसी आवे तेरे बांटै।।
दाम न लेवां, मांगी न देवां, मुख से कदे ना नांटै।
मंहगे मोती, दाम हीरा के, लाल मिले सिर सांटै।।

तोल न मोल है सदा अखण्डी दसों दिशा के बांटै।
आज हमारे भरे भण्डारे, अर्ध उर्ध के घाटै।।
कोड़ी कारण माटी छाणे, लालों से तू नाटै।
कर्मों की बहु मार पड़ी है, बिन समझे विष चाटै।।
हमरे सेठ जगत पति स्वामी, गरीबनाथ दुख काटै।
श्रद्धा करके कोई ले लो, फतेह नाथ नित बांटै।।

पहला शब्द कबीर साहब का था। वे कहते हैं कि बणज कैसा किया रे ओ ! लालों के व्यवहारी। आए तो थे सौदा करने के लिए मंदा सौदा कर लिया। हमारा सौदा तो राम नाम का था। पर हम दूसरे ही सौदे में लग गए। यही पिछले शब्द में–

हम सौदागर आये जी म्हारी हाट अगम के घाटै।

संत दुनिया में सौदागर आते हैं और जहाज भर करके ले जाते हैं उनकी जहाज अगम के घाट पर खड़ी रहती है। अधिकारी जीव कोई होते हैं उसको ले जाते हैं। अनधिकारी रह जाते हैं। कहते हैं कि–

इस वस्तु में नफा बहुत है, सो धरती के बांटै।
दुविधा दुरगत कदे ना व्यापै, कर सौदा मत नाटै।।

इस सौदे में इतना नफा है कि दुविधा दुर्मति कोई भी नहीं व्यापेगी। अगर तू सौदा कर लेगा तो तेरा जीवन सफल हो जाएगा।

ऊंचे चढ़ के संत पुकारैं, रे जग तू मत नाटै।
जैसे दाम गिरह से खरचे, वैसी आवे तेरे बांटै।।

फिर वे कितनी दया करते हैं। कभी वे शीत मीत देते हैं और कभी सिर सांटे देते हैं।

महंगे मोती दाम हीरां के, लाल मिलैं सिर सांटै।
दाम न लेवां, मांगी न देवां, मुख से कदे ना नाटैं।

हम दाम भी नहीं लेते और मांगी भी नहीं देते और मुख से

नाटते भी नहीं हैं। अब कोई अधिकारी ही आकर लेता है। पर हम तो कौडी के कारण ही मिट्टी छानते हैं। कभी देवी, कभी देवता, कभी पित्तर कभी भैरों कभी सेढ़; कभी शीतला, काफी देवता तो तुम्हारे देखते देखते ही बने हैं। तुम उनके ही प्रेमी बने बैठे हो। फिर तुम यह भी कहते हो कि हम सनातनी हैं। झूठी बातें हैं। तुम सनातन धर्म को ही नहीं समझते हो। हमने ऋषि दयानन्द को यूं ही तो मार दिया। वे सनातनी थे और सच्ची कहते थे। सनातन से उसका विरोध नहीं था। सनातनी वही होता है जो परम्परा की चीज है उसकी बड़ाई करे और जो उसका रास्ता बताता हो उससे मिलने की बात करे। काफी चीजें तो हमारे सामने ही बनी हैं। महात्मा बहुत खुल्लम–खुल्ला कह देते हैं। फिर भी हम नहीं समझते हैं।

आपै लीपै, आपै पोतै, आपै मांडै होई।
भीतां धोरै बेटे मांगे, अक्ल रांड की खोई।।

कहती है कि बेटे दे दिए। अब ये अपनी अक्ल को खो देते हैं। भींत कोई बेटे तो नहीं देती है। हमने ही उसको लीप दिया हमने ही उसको पोत दिया है। हम ही उसको बनाते हैं। फिर भी हम नहीं समझते हैं। ये बात तो बहुत ठीक कहते हैं। आर्य धर्म बड़ा पवित्र धर्म था। पर ये सनातनी कहते हैं कि हम सनातनी हैं। अब ये मनसा देवी तो कल बनी है। ऐसे ही संतोषी माता भी। इससे पहले जो धर्म था उसे लो। इससे पहले हमारा पवित्र धर्म वह कुल मालिक था। उसको राम, रमा हुआ कहो और राम और सीता कहो। सीता नाम तो उस शक्ति का है। राम कहते हैं रमे हुए को। कष्ण, कशिश का नाम है। राधा नाम आराधने वाली सुरत का है। अगर इधर ले जाते हो तो तुम्हारी मर्जी है। कष्ण वासुदेव का था वह वषमान की लड़की थी। इधर ले जाओ तो तुम्हारी मर्जी है। जो गर्भ में आता है वह परमात्मा नहीं माना जाता है। आप लोग

बार–बार भगवान कहते हो, भगवान भग नहीं भोगता है और न ही वह भग में आता है। इसीलिए मैं कहता हूं भगवान तो और ही चीज है। वह कौन है? भगवान तो अगर तुम मानो तो सनातन धर्म को समझना चाहिए। भगवान तो सारी दुनियां का कर्ता वह शब्द है। सारी दुनिया का मालिक वह शब्द है। वैसे भगवान चाहे बाबा जी को मान लो चाहे किसी महाराज को मान लो। कोई किसी को मानता है और कोई किसी को मानती है। मैं एक जगह चला गया, गांधी धाम में। मुझे वहां ले गए। ये बोले कि चलो, आपको दिखा कर लायेंगे। वे एक झोटे को ही खुदा मान रहे थे। मैं धर्म के साथ कहता हूं। मेरे साथ माधो भाई भी था। देखा, एक झोटा बड़े–बडे सींग थे उसके। हाथी जैसे आकार का। उन्होंने बताया कि जो इसका निरादर कर देगा उसकी गाड़ी की दुर्घटना हो जाएगी। इससे भय तो बनता ही है। उसको कपड़े औढ़ा रखे थे और पता नहीं क्या–क्या कर रहे थे। मैं भी गया। मैंने कहा–लो एक सेब तो मैं भी इसको खिला दूं। मैंने उसकी तरफ सेब किया तो तत्काल खा लिया। मेरे साथ वालों ने कहा–इसका तो बेड़ा पार हो गया। इसको तो अपने ही हाथ से प्रसाद दे दिया। मैंने कहा–इसकी मर्जी है। तुम चाहे सो जोड़ लो। पर यह बात है कि वह था भागी। उसका तप किया हुआ था। तप उसने किया था पर सतगुरू धारण नहीं किया। सतगुरू धारण कर लेता तो पशु योनि में नहीं आता। यही बात समझने की है-

गुरू बिन माला फेरते गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दान हराम है, जा पूछो वेद पुरान।।

गुरू बिन दान हराम कैसे है? दान का भोग तो भोगना पड़ा। पर पशु योनि में आ गया। उस दान का भोग पशु योनि में ही भोगा। यदि संत सतगुरू मिल जाता है तो फिर हम पशु योनि में नहीं जाते। फिर हमारा कर्जा निमड़ जाता है। क्योंकि सतगुरू

प्रारब्ध कर्म काट देता है। रेख पर मेख मार देता है। उसका सारा कर्ज चुका देता है।

जिनको सतगुरू मिलिया। उनका लेखा निमड़िया।।

काल का कर्ज चूक जाता है।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जून/जुलाई मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	हांसी	18 जुलाई	-	24 जुलाई
2.	पुट्ठी सामाण	25 जुलाई	-	31 जुलाई
3.	मोठ	01 अगस्त	-	07 अगस्त
4.	अण्टा	08 अगस्त	-	14 अगस्त
5.	बरवाला	15 अगस्त	-	21 अगस्त
6.	फतेहाबाद	22 अगस्त	-	28 अगस्त

आगामी मास के सत्संग

21	जुलाई	गुरुवार (गुरु पूर्णिमा)	भिवानी
19	अगस्त	शुक्रवार (रक्षा बन्धन)	दादरी

संत की पहचान

महर्षि शिवव्रत लाल जी

संत की पहचान क्या है ?

इसका उत्तर देना हमारी सामर्थ्य से बाहर है। संतमत के ग्रंथों में वर्णन है।

साध का निरख आंख और माथा।
सत का नूर रहे जिस साथा।
यह चिन्ह देख करे पहचान।
गुरु पूरे का जिसको ज्ञान।।

चौड़ा माथा विशाल हृदय होने का चिन्ह है। वह पक्षपाती, कट्टर और ईषालु न होगा। उसमें अध्यात्म की फुरना जोर शोर के साथ होगी।

आंख से अभिप्राय यह है कि किसी ऐसे मनुष्य को गुरु न करना चाहिये जो अंधा, काना या ऐंचाताना है या उसकी आंख में फूली है क्योंकि बुद्धिमानों का कथन है-

सो में सूर सहस में काना। सवा लाख में ऐंचाताना।।

जो अन्धा होगा उसमें शील, संकोच और प्रेम प्रीति न होगी। शील, प्रेम, लाज, सदाचार और नम्रता का सम्बन्ध अधिकतर आंखों से है। अंधे सैकड़ों आदमियों की भीड़ में रहकर उनको तितर-बितर कर देते हैं।

काना उसे कहते हैं जिसकी एक आंख हो। वह इतना झगड़ालू और चालाक होता है कि हजारों को अपने दुराचारों से छिन्न-भिन्न कर देता है। इन दोनों का दर्जा यद्यपि बहुत नीचा है मगर सबसे झगड़ालू ऐंचाताना होता है, क्योंकि वह जन्म से ही अंगहीन है। यह अपनी खराब आदत से लाखों आदमियों को बीच भेदभाव और भिन्नता पैदा कर देगा। वह रूहानियत में कभी भी उन्नति नहीं कर सकेगा। सिवाय झगड़ा मचाने के उसका और कोई काम न होगा।

ऐंचाताना उसे कहते हैं जिसकी कोई आंख ऊपर की और चढ़ी होगी या एक आंख छोटी और दूसरी बड़ी होगी।

संत या आध्यात्मिक रूप से बढ़े हुए मनुष्य की आंख चमकीली और तेजवान होती है। आंख के ढेले तक में विशेष प्रकार की चमक होती है और सब दोषों से रहित होती है। उसका माथा चौड़ा और तेजवान होता है।

अनमोल वचन

- जीव को अपने मनुष्य-जन्म का मोल याद रखना चाहिये। समय बीत रहा है और उम्र कम होती जा रही है अतएव मनुष्य को समय रहते चाहिये की प्रभु की भक्ति और प्रेम के मार्ग पर चलें। *-सन्त कबीर साहिब*
- केवल उन्हीं अभ्यासियों का जो जीते जी मुक्ति का अनुभव कर चुके हैं अर्थात् जिन्होंने जीते जी मृत्यु की दशा को पार कर लिया है, मुक्ति प्राप्त करने का दावा सही है। *-संत तुलसी साहिब*
- परमात्मा रचना के कण-कण, पत्ते-पत्ते, जर्रे-जर्रे में व्यापक नजर आता है, परन्तु अज्ञानी माया के भ्रम में, आवागमन के चक्कर और कर्मों के जाल में फंसा रहता है और सर्व व्यापक परमेश्वर के दर्शन नहीं कर पाता। *-संत नामदेव जी*

ज्ञान-सार

- जिसने अपना अभिमान का बोझ हल्का कर लिया है, वही पार उतर सकता है। जिसने बोझ बढ़ा लिया है, वह तो डूबेगा ही।
- दूसरों से लेने की अपेक्षा देने में जिसे अधिक सुख नहीं मालूम होता वह सच्चा संत नहीं हो सकता।
- दुनिया में घूमना बहुत आसान है, पर उसमें से निकलना उतना ही मुश्किल है।
- जो मनुष्य विपत्ति में भी अपने ऊपर ईश्वर की कृपा को देख सकता है, वह कभी मृत्यु कष्ट के अधीन नहीं हो सकता।
- जिसकी दृष्टि में जन्म और मरण समान हो वही साधु है।

सत्संग भावांश हिसार 5-4-2005

सौदा कर चल रे भाई, यहां तो राम नाम तत्सार।

हम सभी सांसा रूपी पूंजी लेकर संसार में सौदा करने के लिए आए हैं। यदि हम इस पूंजी को सत्य का सौदा करने में लगा देंगे तो हम संसार के जन्म-मरण सहित असंख्य दुखों से अपने आप को बचा कर अपना कल्याण करके चले जाएंगे। यदि अपनी मान बड़ाई अथवा संसारी सौदों में इसे लगा देंगे तो अन्त समय में रोने-धोने और पछताने के सिवाय कुछ भी हमारे हाथ नहीं लगेगा।

एक भाई ने अभी एक कागज लिख कर भेजा। उसने इस पर लिखा कि अब मेरे पास 'अ' नहीं है, आप 'क' मुझे दे दो। मैंने कागज पर ही लिख दिया कि 'क' तो मैं दे दूंगा, तुम 'प' ले आओ। उसके पास कागज पहुंचते ही मेरे पास आया और उसने कहा-मेरा मतलब तो यह था कि अब मैंने 'अ' यानि अहंकार त्याग दिया है अब आप मुझ पर 'क' यानि कृपा कर दो। मैंने कहा मैंने भी गलत नहीं लिखा है। मैंने यही लिखा है कि तुम्हारे पास में 'प' यानि पात्र नहीं है इसलिए 'क' यानि कृपा नहीं मिलेगी।

पिया को पाती लिखूं, जो कहीं हो परदेश।
तन में, मन में, सांस में, ता को क्या सन्देश।।

पत्र तो उसी को लिखा जाता है जो कोई परदेश में रहता हो। परन्तु वह मालिक तो तन, मन और सांस-2 में है उसको सन्देश देने की आवश्यकता नहीं है। पात्र बन जाओ। परन्तु इतना होने पर भी वह भाई चुप नहीं रहा। उसने आगे कहा-मान लो मैं पात्र हूं तो आप मुझे 'क' यानि कृपा दे दोगे, फिर आपके पास दूसरों को देने के लिए

क्या बचेगा? मैंने उसको समझाया कि जो पूर्ण होता है वह एक पात्र को पूर्ण मिल जाने के बाद भी अपने स्थान पर वह पूर्ण ही रहता है। यदि फिर दूसरा पात्र आता है तो उसको भी वह पूर्ण ही मिल जाता है। फिर भी उस पूर्ण में कोई कमी नहीं होती है। पूर्ण तो अपने स्थान पर हमेशा पूर्ण ही रहता है।

सन्त पात्र बनाने के लिए वचनों के घड़-2 करके बाण मारते हैं। परन्तु जीव उन बाणों को ओटने के स्थान पर उनसे बचने की कोशिश करता रहता है। किसी बाण के बाईं ओर से किसी के दाईं ओर से किसी के ऊपर और किसी के नीचे होकर वह उनसे बचता ही रहता है। वह समझता है कि मालिक ने ये बाण तुझे बीन्धने के लिए नहीं छोड़े हैं, ये तो औरों को बीन्धने के लिए ही छोड़े हैं। यदि कोई जीव मालिक के वचनों के बाणों के आगे अपनी छाती सामने अड़ाकर बिन्धवा ले तो वह पात्र हो जाए, और मालिक उसको अपनी कृपा से मालामाल ही कर दें। परन्तु लोग सच्चाई का सौदा करने नहीं आते हैं वे तो यहां संसारी चीजों का सौदा करते रहते हैं। सन्त तो जीवों की संसारी चाहें भी पूरी करते हैं। इसलिए वे उनको वैसा ही सौदा देकर भेज देते हैं। वे फिर छोटी-मोटी और भी मांग करते हैं तो सन्त सब्जी विक्रेता की तरह से हरी मिर्च और धनिया जैसी चीजें उनकी तरफ फेंक कर कहते हैं कि चल, यह फ्री में और भी ले जा। सच का सौदा करने मालिक के पास कोई बिरला ही पहुंचता है। मालिक उसको भी पहचान लेते हैं, तो कहते हैं कि हां, बैठ भाई, तुझे मैं पूरा तोलकर तेरा सौदा दूंगा। अफसोस की बात है कि ऐसे लोग आते ही नहीं हैं। संसारी चीजों के ग्राहक ही उनके पास आते हैं। फिर बेचारे सन्त सतगुरु का तो कोई दोष नहीं होता है। फिर तो वही बात होती है जैसे अभी एक भाई ने यह वाणी कही थी-

मारी थी लागी नहीं बंकनाल में फूंक।
गुरु बेचारा क्या करे, चेले माहीं चूक।।

''मैं कृष्णपाल सिंह मूलत: गांव बुढसैनी, जिला बागपत, उत्तर प्रदेश का निवासी हूं, अब बुराड़ी गांव दिल्ली में रह रहा हूं। मेरी शादी 25-4-1994 को हुई थी, दस वर्ष बाद तक भी मेरे यहां कोई सन्तान नहीं थी। इस बीच हमने काफी इलाज कराया, कई वर्ष पहले हमने थक हार कर सभी इलाज बन्द करा दिये थे। मैंने 5 जुलाई 2001 को गुरु पूर्णिमा के दिन राधास्वामी आश्रम भिवानी में महाराज जी से नामदान लिया। मेरे छोटे भाई के यहां 13-10-2002 को एक पुत्र ने जन्म लिया। मुझे बहुत खुशी हुई, लेकिन इस बच्चे ने पैदा होने के 36 घंटे बाद तक भी पेशाब नहीं किया। मैंने डॉक्टर से बात की व बच्चे की जांच करने को कहा, लेकिन डॉक्टर ने सब कुछ सामान्य बताया। तभी एक बूढ़ी मां ने, जो वहीं बैठी थी हमसे कहा कि तुम्हारे यहां किसी देवी-देवता की पूजा होती हो, उसके नाम का रुपया उठा कर रख दो। तभी मुझे महाराज जी का ध्यान आया, मैंने मन ही मन महाराज जी से विनती की कि महाराज जी कल दशहरे का सत्संग जो नजफगढ़ में है मैं उसमें नहीं आ पाऊंगा, इसीलिये यदि मुझे सत्संग में बुलाना चाहते हो तो बच्चे को ठीक कर दो। तभी पांच मिनट में ही वह चमत्कार हुआ और बच्चे ने अस्पताल का बिस्तर गीला कर दिया। तभी हम जच्चा बच्चा को छुट्टी दिलवा कर घर ले आये। इसके बाद मेरे कुछ शुभ चिन्तकों ने मुझसे कहा कि महाराज जी सेब का प्रसाद बनाकर देते हैं आप भी अपनी पत्नी को साथ लेकर किसी दिन दिनोद आश्रम में महाराज जी से प्रसाद बनवा कर खिलाओ, तो आपके यहां भी मालिक मौज करेगा। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मुझे मालूम था कि मेरे महाराज जी अन्तर्यामी हैं, उन्हें तो सभी का ख्याल है। मेरी जीजी व जीजा भी मेरी ओर से बहुत ही चिन्तित थे। उन्होंने भी मेरी पत्नी को मेरठ ले जाकर इलाज शुरू कराया, मगर दो तीन महीने बाद भी कोई बात

नहीं बनी। फिर उन्होंने दूसरी डॉक्टर से इलाज शुरू कराया, उस डॉक्टर ने सभी वही टैस्ट जो हम कई वर्ष पहले करवा चुके थे, दोबारा कराने के लिए लिख दिये। तभी मैंने कहा कि मुझे ई.एस. आई. सुविधा उपलब्ध है, तो मैं प्राईवेट इलाज नहीं कराऊंगा। मैं ई.एस.आई. से ही इलाज कराऊंगा। मगर पहले मैं एक बार महाराज जी के दर्शन करके आऊंगा। उसके बाद जैसा तुम कहोगे मैं करूंगा। मैं 29-3-2004 को महाराज जी के दर्शन व सत्संग सुनने के लिए भिवानी आश्रम गया और सत्संग सुनते-2 ही मैंने महाराज जी से प्रार्थना की कि महाराज जी अब तो आपको कुछ करना ही पड़ेगा, नहीं तो काफी परेशानी हो जाएगी। और मेरे मालिक ने मेरी इसी प्रार्थना को सुन लिया व उसी माह मेरी पत्नी को गर्भ धारण हो गया। मेरी पत्नी शुगर की मरीज थी व रोजाना 500 एम.जी. की मैट फार्मिन गोली दिन में तीन बार खाती थी व और भी शारीरिक परेशानी थी, लेकिन महाराज जी ने ऐसा करिश्मा किया जैसे परमात्मा खुद मेरे घर खुशियां लेकर आ गया हो। 29-10-2004 को बड़े ऑपरेशन से मेरी पत्नी को बेटी पैदा हुई। कुछ परेशानियां जरूर आई मगर महाराज जी ने एक-2 करके सबको हल कर दिया। अब हम पत्नी व बेटी ठीक-ठाक हैं व महाराज जी से आशा व प्रार्थना करते हैं कि जैसी दया मुझ पर की है ऐसी सब पर करें। राधास्वामी ।''

-कृष्णपाल सिंह,
विजय कालोनी, बुराडी विस्तार, दिल्ली-84

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

एक राजा प्रतिदिन 101 ब्राह्मणों को भोजन कराता था तथा 101 गायों का दान करता था। इतना दान पुण्य करके स्वयं भोजन करता था।

एक दिन वह जंगल में शिकार खेलने जा रहा था। रास्ते में एक कुतिया ने बच्चे दिये थे तथा प्यास से बिलबिला रही थी। राजा घोड़े से उतरा अपनी छागल में से कुतिया को पानी पिलाया और आगे चला गया।

बहुत दिनों के बाद नारदमुनि दरबार में आये। राजा से प्रार्थना की-महाराज आपने जो दान और पुण्य कर्म किये हैं, उनमें से केवल एक दान मेरे निमित्त कर दें।

महाराज ने उत्तर दिया कि उन्होंने तो लाखों गऊ दान किये हैं। जितने चाहो अपने निमित करवा लो। नारद जी ने कहा-एक दिन आपने एक कुतिया को पानी पिलाया था। वह जलदान मेरे निमित कर दो।

महाराज बोले-भला वह भी कोई दान था। किसी बड़े दान की बात कहिए। नारद जी ने उत्तर दिया-राजन दान तो केवल एक वही था। बाकी तो सब पाखण्ड है, लोग दिखावा है, अपने बड़घन का विज्ञापन हैं।

राहे अदम में चोर भी मिलता नहीं कोई।
जो सिर से ले उडे मेरी गठडी गुनाह की।। ●

कहानी

युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वपन्ना व बोधस्य योगो भवति दु:खहा।।

योग शब्द उस ध्यान योग का वाचक है, जो सम्पूर्ण दुखों का नाश करके परमानद और परम शान्ति के समुन्द्र परमात्मा की प्राप्ति करा देने वाला है।

उचित मात्रा में नींद ली जाये तो उससे थकावट दूर होकर शरीर में ताजगी आती है, परन्तु वही नींद यदि आवश्यकता से अधिक ली जाये तो उससे तमोगुण बढ़ जाता है, जिससे अनवरत आलस्य घेरे रहता है और स्थिर होकर बैठने में कष्ट मालूम होता है। इसके अतिरिक्त अधिक सोने में मानव जीवन का अमूल्य समय भी नष्ट होता है। कभी ताजगी नहीं आती। शरीर, इन्द्रिय और प्राण शिथिल हो जाते हैं, शरीर में कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

दिन के समय जागते रहना, रात के समय पहले तथा पिछले पहर में जागना और बीच के दो पहरों में सोना साधारणतया इसी को उचित सोना-जागना माना जाता है।

खाने-पीने की वस्तुएं ऐसी होनी चाहिये, जो सत्य और न्याय के द्वारा प्राप्त हो और सात्विक हों, रजोगुण और तमोगुण को बढ़ाने वाली न हो, पवित्र हों तथा योग साधन में सहायता देने वाली हों। उनका परिणाम भी उतना ही परिमित होना चाहिये, जितना अपनी शक्ति स्वास्थ्य और साधन की दृष्टि से हितकर एवं आवश्यक हो। इसी प्रकार घूमना-फिरना भी उतना ही चाहिये, जितना अपने लिये आवश्यक और हितकर हो।

वर्ण, आश्रम, अवस्था स्थिति और वातावरण आदि के अनुसार कर्तव्य कर्म बतलाये गये हैं, उन्हीं का नाम कर्म है। उन कर्मों का उचित स्वरूप में और उचित मात्रा में यथायोग्य सेवन करना ही कर्मों में युक्त चेष्टा करना है। जैसे परमात्मा की भक्ति, दीन-दुखियों की

सेवा, माता-पिता, गुरुजनों का आशीर्वाद, दान आदि। जीविका सम्बन्धी कर्म यानि शिक्षा, पठन-पाठन व्यापार आदि कर्म और शौच-स्नानादि क्रियाएं, ये सभी कर्म वे ही करने चाहिये जो किसी का अहित करने वाले न हो, किसी को कष्ट पहुंचाने या किसी पर भार डालने वाले न हो और ध्यान योग में सहायक हो तथा इन कर्मों का परिमाण भी उतना ही होना चाहिये, जितना जिसके लिये आवश्यक हो, जिससे न्यायपूर्वक शरीर निर्वाह होता रहे और ध्यान योग के लिये पर्याप्त समय मिल जाये। ऐसा करने से शरीर, इन्द्रिय और मन स्वस्थ रहते हैं और ध्यान योग सुगमता से सिद्ध होता है।